www.thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंकः-८-६, फरवरी-मार्च, सन्-२०१७, सं०-२०७३ वि०, दयानंदाब्द १६३, सृष्टि सं० १,६६,०८,५३,११७; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

दयानन्द और विवेकानन्द

स्वामी दयानन्द सत्य के सम्बन्ध में चट्टान जैसे थे, जबकि विवेकानन्द एक लचकदार व्यक्तित्व के स्वामी थे!

डरवन (दक्षिण अफ्रीका) में तीस वर्ष पूर्व दिये स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के भाषण के सम्पादित अंश

महान व्यक्तियों की तुलना करना मेरा स्वभाव नहीं है। जो भी व्यक्ति मनुष्य के रूप में जन्मा है वह अपूर्ण है, चाहे वह दयानन्द हो, राम, कृष्ण या बुद्ध हो, ईसा या मुहम्मद हो। मैं विवेकानन्द एवं दयानन्द की तुलना नहीं करूँगा। फिर भी कुछ ऐसे तथ्य हैं जो मैं आप लोगों के सामने रखना चाहूँगा। दयानन्द और विवेकानन्द देश के दो विभिन्न क्षेत्रों से आये, एक गुजरात से और दूसरा बंगाल से। दोनों संन्यासी थे, परन्तु दयानन्द संन्यास की परम्परिक प्रथाओं की उपज थे। परन्तु मुझे नहीं पता कि स्वामी विवेकानन्द व रामकृष्ण मिशन के अन्य सब संन्यासी किस परम्परा के संन्यासी थे। स्वामी दयानन्द अपने युग के संस्कृत या वैदिक साहित्य के सर्वश्रेष्ठ विद्वान् थे। उन्होंने पाश्चात्य भाषाओं का अध्ययन नहीं किया था। वे बड़ी मधुर एवं सरल संस्कृत भाषा बोलते थे। विवेकानन्द अंग्रेजी भाषा धारा प्रवाह बोलते थे। दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की, उन्होंने इस संस्था का नाम न तो अपने नाम पर और न अपने गुरु विरजानन्द के नाम पर जिन्हें वे बहुत आदर करते थे-रखा। उन्होंने अपने सभी ग्रन्थों, लेखों के अन्त में गुरु विरजानन्द का नाम बड़े आदर के साथ लिया। विवेकानन्द ने जो मिशन स्थापित किया उसका नाम अपने गुरु रामकृष्ण के नाम पर रखा जिन्हें वे बहुत अधिक प्रेम करते थे। दयानन्द ने अपने गुरु से १८६३ में विदा ली। उस समय उन्होंने उनके सामने प्रतिज्ञा की कि मैं अपना सारा जीवन भारत एवं बाहर के लोगों में फैली अविद्या एवं अन्धविश्वास के नाश करने में लगा दूँगा। स्वामी दयानन्द ने १८६७ के हरिद्वार कुम्भ मेले से प्रसिद्ध हुए, जब उन्होंने वहाँ पाखण्ड खण्डिनी पताका लहराई थी। हरिद्वार का कुम्भ कट्टर पंथियों का सबसे बड़ा मेला। विवेकानन्द के शिकागो में अनुशासित, बुद्धिजीवी एवं सभ्य लोगों की सभा में भाषण दिया, परन्तु दयानन्द के श्रोता उजड्ड एवं झगड़ालू किस्म के व्यक्ति थे, जो ऐसे किसी भी सन्देश को सुनने को तैयार नहीं थे, जो उन्होंने अब तक नहीं सुना था। एक हिन्दू संन्यासी हिन्दू परम्पराओं के विरुद्ध बोल रहा था।

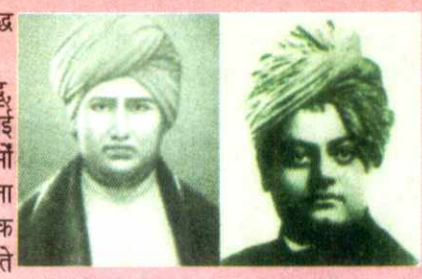

स्वामी दयानन्द के लिये हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुसलमान एवं ईसाई सब एक समान थे। वे सभी धर्मों को सत्य के आधार पर खड़ा करना चाहते थे। वे सारे विश्व को एक ऐसे धर्म के सूत्र में बाँधना चाहते थे, जो सभी को समान रूप से स्वीकार्य हो। वेद की शिक्षाएँ भौगोलिक व ऐतिहासिक सीमाओं से बँधी हुई नहीं हैं। इसीलिए स्वामी दयानन्द चाहते थे कि वेदों का सन्देश सारे संसार में फैले। इस उद्देश्य के लिये उन्होंने प्रो.मैक्समूलर व मोनियर विलियम्स से पत्र व्यवहार किया और पं.श्यामजी कृष्ण वर्मा को यूरोप भेजा। विवेकानन्द ने भी अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वैदिक कॉलेज की स्थापना के विषय में सोचा, क्योंकि उनकी मान्यता थी कि केवल वेद की शिक्षा ही ऐसी है जिससे मनुष्य अन्धविश्वास से ग्रसित नहीं होगा।

सत्य के मूल्य पर स्वामी दयानन्द को विदेश से किसी भी प्रकार के सम्बन्धों का आकर्षण नहीं था। मैं नहीं जानता ऐसे मामलों में विवेकानन्द के क्या विचार थे। विवेकानन्द एक लचकदार व्यक्तित्व के स्वामी थे, परन्तु स्वामी दयानन्द सत्य के सम्बन्ध में एक दृढ़ चट्टान की तरह थे।

कुछ मामलों में विवेकानन्द एक परम्परावादी हिन्दू प्रतीत होते हैं। वे हिन्दुओं के मनों से अन्धविश्वास समाप्त करने के लिए वेद पाठशाला या वैदिक कॉलेज स्थापित करने को बहुत उत्सुक थे। परन्तु उनकी वेद सम्बन्धी अवधारणा ऋषि दयानन्द व प्राचीन ऋषियों की अवधारणा से अलग थी। दयानन्द एवं विवेकानन्द दोनों ही अध्यात्म विद्या और धर्म को जोड़ना चाहते थे। दयानन्द ने भारत के विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों का मानवमात्र के कल्याण के लिये मिलकर काम करने का आह्वान किया। दयानन्द मुसलमानों, ईसाइयों, बौद्धों, जैनियों और हिन्दुओं को समान रूप से प्रेम करते थे। वे चाहते थे कि सब लोग एक गोल मेज पर बैठकर अपने मतभेदों को भुला कर एक साझा कार्यक्रम तय करें। विवेकानन्द का उद्देश्य भी यही था, परन्तु इसका हल निकालने के स्थान पर उनका मानना था कि तुम मेरा अन्धविश्वास सहन करों, मैं तुम्हारा अन्धविश्वास सहन करूँ। तुम मेरे पाखण्ड एवं कपट को सहन करो, मैं तुम्हारे पाखण्डों और छल-कपट के विरुद्ध नहीं बोलूँगा। यहाँ दयानन्द विवेकानन्द से अलग हैं। अतः कुछ वर्ग के लिए विवेकानन्द अधिक मान्य हैं अपेक्षाकृत स्वामी दयानन्द के।

स्वामी दयानन्द हर प्रकार की मूर्ति पूजा का विरोध करते हैं। विवेकानन्द भी मूर्तिपूजक नहीं थे, परन्तु जहाँ दयानन्द इस बुराई का विरोध करने का साहस रखते थे, विवेकानन्द में यह बात नहीं थी। उनके गुरु स्वयं काली के मन्दिर के मुख्य पुजारी थे। अतः स्पष्ट है कि वे मूर्ति पूजा का समर्थन करते थे। एक मूर्ति पूजक होने पर भी यदि उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस एक महान व्यक्ति हो सकते थे, जैसे कि वे थे तो फिर कोई मूर्ति पूजा की निन्दा कैसे कर सकता था।

विवेकानन्द एक विशेष प्रकार के आस्तिक थे। एक ओर उन्हें महान् दार्शनिक शंकराचार्य के अद्वैतवाद में बौद्धिक सान्त्वना मिली, यह वही शंकर थे जिन्होंने भारत से बौद्धधर्म का उन्मूलन किया था। विवेकानन्द के लिये बुद्ध ईश्वर थे। जैसा हमें बताया गया है (विवेकानन्द के अनुसार)-कहीं बुद्ध ने अपने शिष्यों को कहा थाकि वे ४००-५०० वर्षों बाद पुनः मानव रूप में आयेंगे। और कौन जानता है कि वे ही ईसा के रूप में आये हों। विवेकानन्द को इस बात का बड़ा विश्वास था। उनके लिये बुद्ध एवं ईसा दोनों ईश्वर हैं, दोनों सर्वोच्च हैं। आज जैसा कि वे कहते हैं यह संसार दोनों के बीच बंटा हुआ है। मनुष्य आखिर मनुष्य ही है, वह एक ऐसे ईश्वर को नहीं पूज सकता जो मानव के रूप में न हो ऐसा विवेकानन्द कहते हैं। सर्वोच्च सत्ता (सच्चिदानन्द) को कोई भी प्रार्थना समर्पित नहीं की जा सकती। एक व्यक्ति केवल उसकी ही पूजा कर सकता है जो पृथ्वी पर मानव के रूप में आये ऐसे विवेकानन्द के विचार हैं। शायद इनसे पूर्व कोई पूजा नहीं थी; न सन्ध्या-उपासना। मैं विवेकानन्द के साथ तर्क नहीं करना चाहता। वह हिन्दुत्व की अहिन्दुओं के सामने ऐसी तस्वीर पेश करते हैं। वे कृष्ण, बुद्ध एवं ईसा को समानार्थी एवं समतुल्य के रूप में एक ही बताते हैं। उनके आस्तिकता सम्बन्धी विचार वेद, उपनिषद् पर आधारित नहीं हैं, न शंकर, न रामानुज के अनुकूल, न वैष्णव, न शैव के अनुसार, न योग और सांख्य पर आधारित हैं। कृष्ण, बुद्ध और ईसा की विशिष्ट मण्डली में वे मुहम्मद को शामिल नहीं करते। वह केवल सन्देशवाहक हैं। विवेकानन्द की ज्ञान मीमांसा का अनुसरण करना आसान

(शेष. पृष्ठ ३ पर.....)

विनय पीयूष

ऐसा यज्ञ करो मनभावन !

समुद्रं गच्छ स्वाहान्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवःसवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु स्वुर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा।।

(यजु. : 6/21)

ऐसा यज्ञ करो मनभावन !

ज्योति उठे नभ-अन्तरिक्ष तक,
धूम मिले रवि के प्रकाश से,
भस्म ढांप दे वसुधा सारी !
ऐसा यज्ञ करो मनभावन !

रत्नाकर के, दिव्य सोम के,
द्यावा, पृथ्वी, अन्तरिक्ष के,
मित्र-वरुण के, अहोरात्रि के,
परम सत्य के, वेद-ज्ञान के,
विद्युत रूप अग्नि पावन के
गुह्य-गुणों के बन अधिकारी
उपकृत कर दो दुनिया सारी !
मनसा, वाचा और कर्मणा
जन-मन को कर दो आभारी !

ऐसा यज्ञ करो मनभावन !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

ओजोमित्र का सच्चा स्मारक - आर्य समाज

आर्ष विद्या एवं संस्कृत भाषा तथा व्याकरण शास्त्र के प्रकाण्ड पंडित स्व. आचार्य ओजोमित्र शास्त्री, विद्यावारिधि, भू.पू.कुलपति गुरुकुल अयोध्या की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर दि. ०५.०२.१७ को लखनऊ के पूर्वोत्तर 'कमता' में आयोजित यज्ञ के अनन्तर शोकाकुल श्रद्धालु जनों को सम्बोधित करते हुए आर्य जगत के ख्यातिलब्ध संन्यासी स्वामी वीरेन्द्र परिव्राजक ने कहा है कि कमता में आर्य समाज की स्थापना एवं आर्य समाज मंदिर का निर्माण ही स्व.शास्त्री जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अनुभव-समृद्ध स्वामी जी का यह कथन इस अर्थ में अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि आधुनिक विद्वान् एवं आर्यजन आर्य समाज की स्थापना एवं मंदिर निर्माण की बात तो दूर, आर्य समाज का नाम भी लेने में कतराने लगे हैं। जबकि स्वर्गीय ओजोमित्र शास्त्री का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज को समर्पित रहा है और उनकी प्रत्येक श्वास में आर्य समाज की प्राणधारा ही प्रवाहित थी।

उनका स्मारक 'आर्य समाज' के अलावा और क्या हो सकता है? यह क्या कोई कम उपलब्धि है कि स्व.शास्त्री जी ने अलीगंज कुर्सी रोड पर आज से लगभग आधी शताब्दी पूर्व एक जीर्ण-जर्जर आर्य समाज भवन का पुररुद्धार करके उसे भव्य आर्य समाज मंदिर का रूप दिया, तथा सुन्दर यज्ञशाला बनवाई, सभागार और अतिथि कक्ष बनवाये, वैदिक सूक्तियों से भवन को मंदिर का स्वरूप दिया तथा उसके द्वार चौबीसो घंटों के लिए वैदिक संस्कारों हेतु खोल दिये। इतना ही नहीं वैदिक संस्कारों को लोकप्रिय बनाने में वह स्वयं सन्नद्ध हुए तथा अपने पुत्रों विशेषकर श्री विश्वमित्र को भी संस्कार कराने हेतु अपेक्षित प्रशिक्षण प्रदान किया।

आचार्य ओजोमित्र से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध रहे स्वामी वीरेन्द्र जी का यह कथन भी ध्यान देने योग्य है कि प्रायः आर्य विद्वानों की संतानें आर्थिक दृष्टि से समृद्ध नहीं हो पातीं, और होती भी हैं तो आर्य समाज के प्रति पिता की तरह समर्पित नहीं होतीं किन्तु स्व.ओजोमित्र शास्त्री उन सौभाग्यशालियों में हैं, जिनकी सन्तानों ने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से सम्पन्नता प्राप्त की तथा समाज से भी अपने को जोड़े रखा तथा आर्य सामाजिक दायित्वों का पूरी तरह निर्वाह भी किया। विश्वमित्र, सर्वमित्र तथा अखिलमित्र, कीर्तिशेष ओजोमित्र जी के तीन पुत्र हैं, जो अपने पैरों पर खड़े हैं और उनके परिवार भी वैदिक हैं, अखिलमित्र जी प्रायः आर्य समाज मन्दिर महावीरगंज (अलीगंज, कुर्सीरोड, निकट डंडहिया बाजार, लखनऊ का कार्यभार, उत्सव, संस्कार इत्यादि करके संभाल रहे हैं तथा उनका प्रयास भी यही है कि वे अपने श्रद्धेय पिता की कीर्ति को धूमिल न होने दें। इसके अतिरिक्त आर्य प्रचारक श्री सत्यप्रकाश जी (बाराबंकी) भी उनके पुत्रवत् हैं तथा आर्य समाज की कीर्ति विस्तार की भावना उनके सांस सांस में समाहित है।

कमता क्षेत्र में पहले भी आर्य समाजिक गतिविधियाँ चलती रही हैं। कई वर्ष पूर्व की बात है कि स्वर्गीय डॉ.के.पी.कक्कड़ भी आर्य समाज मंदिर के निमार्णार्थ कमता में आपन एक भूखण्ड दान स्वरूप देना चाहते थे किन्तु उनकी शर्तें काफी टेढ़ी मेढ़ी थीं। अतः बात आगे नहीं बढ़ पाई। जब विश्वमित्र जी ने कमता में अपना आवास बनाया तो स्थाई यज्ञवेदी बनवाकर आर्य समाज का सत्संग करते रहे। जो बाद में स्वगृह निर्माण की व्यस्तता के कारण रुक गया। अब जबकि श्रद्धेय ओजोमित्र शास्त्री ने अपनी अंतिम सांसें कमता में ही ली हैं, यहाँ से उनकी कर्मस्थली तिन्दौला (बाराबंकी जनपद) जहाँ आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना उनके द्वारा हुई है, कोई अधिक दूर नहीं है; लखनऊ के उत्तरी पूर्वी छोर पर कोई आर्य समाज मंदिर है भी नहीं; अतः कमता में आर्य समाज की स्थापना युगीन आवश्यकता की पूर्ति के साथ शास्त्री जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कई लोग आर्य समाज को हाशिये पर डालकर आगे बढ़ना चाहते हैं; जो कदापि उचित नहीं है क्योंकि आर्य समाज का नाम जन जागृति, जन चेतना की तरंगें प्रवाहित कर देता है। हो भी क्यों न, जिस संस्था की स्थापना महान् ऋषिवर दयानन्द ने की हो; जिसके द्वारा धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा और स्वराज्य का महान् उद्देश्य सिद्ध किया गया हो, जिस संस्था की जड़ों को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, धर्मवीर आर्य पथिक पंडित लेखराम, सत्यव्रती महाशय राजपाल जैसे बलिदानियों ने अपने रक्त से सींचा हो, लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने जिसके विचारों से प्रेरणा प्राप्त कर भारतीय अखण्डता को पूर्ण किया हो तथा पंडित रामप्रसाद बिस्मिल ने देश की आजादी के लिए प्राणोत्सर्ग करते समय जिस संस्था को अपनी माँ कहकर पुकारा हो, जिस आर्य समाज के पास चारों वेदों का प्रकाश हो, वेदभाष्य और वेदभाष्यकर्ता हों; उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रन्थों की व्याख्याओं का विपुल भण्डार हो, जिसके शास्त्रार्थों की ललकार आज भी सुनी जाती हो, पंडित रामचन्द्र देहलवी जैसे शास्त्रार्थ महारथी, महात्मा नारायण स्वामी जैसे वैदिक वाङ्मय के ज्ञाता हों, पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे विद्यावारिधि और स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जैसे वैज्ञानिक संन्यासी तथा महात्मा आर्यभिक्षु स्वामी आत्मबोध सरस्वती जैसे अनेक भाषाओं के व्याख्याता, पं.गुरुदत्त विद्यार्थी और भगवद्दत्त जैसे शोधकर्ताओं की महान् सम्पदा हो; उस ज्ञानालोक को जन जन में कौन नहीं पहुँचाना चाहेगा! आर्य समाज ही पाखण्डों, अन्धविश्वासों के दुर्गम दुर्ग को अपनी सात्विक विचार सरणि से नष्ट कर सकता है; अस्तु, कमता में आर्य समाज का उत्तम स्मारक बनना ही चाहिए। लखनऊ के निरन्तर विस्तार के कारण उत्तर-पूर्व में कमता तथा जानकीपुरम में आधुनिक शैली के आर्य समाज मंदिर निर्माण हेतु उपयुक्त स्थल हैं।

यद्यपि आचार्य विश्वव्रत ने कमता, लखनऊ में वेद प्रचार मंडल के गठन की घोषणा की है किन्तु सभी जानते हैं कि आचार्य विश्वव्रत का जीवन आर्य समाज को समर्पित है और उनका चरम लक्ष्य भी आर्य समाज ही है। कमता एवं जानकीपुरम दोनों ही स्थानों पर आचार्य विश्वव्रत के संरक्षण और निर्देशन में ही यह महत्कार्य सम्पन्न होना अभीष्ट है और यही उस 'श्वेत वस्त्रों में साधु' ओजोमित्र के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१७३

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में अष्टम समुल्लास का अंश

नित्यत्व-विचार

नवां नास्तिक कहता है-कि स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति होती है। जैसे पानी, अन्न एकत्र हो सड़ने से कृमि उत्पन्न होते हैं। और बीज पृथिवी जल के मिलने से घास वृक्षादि और पाषाणादि उत्पन्न होते हैं। जैसे समुद्र वायु के योग से तरंग और तरंगों से समुद्रफेन; हल्दी, चूना और नींबू के रस मिलाने से रोरी बन जाती है वैसे सब जगत् तत्त्वों के स्वभावगुणों से उत्पन्न हुआ है। इसका बनाने वाला कोई भी नहीं।

(उत्तर) जो स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति होवे तो विनाश कभी न होवे और जो विनाश भी स्वभाव से मानो तो उत्पत्ति न होगी। और जो दोनों स्वभाव युगपत् द्रव्यों में मानोगे तो उत्पत्ति और विनाश की व्यवस्था कभी न हो सकेगी और जो निमित्त के होने से उत्पत्ति और नाश मानोगे तो 'निमित्त' उत्पत्ति से और विनाश होने वाले द्रव्यों से पृथक् मानना पड़ेगा। जो स्वभाव ही से उत्पत्ति और विनाश होता तो एक समय ही में उत्पत्ति और विनाश का होना सम्भव नहीं। जो स्वभाव से उत्पन्न होता हो तो इस भूगोल के निकट दूसरा भूगोल, चन्द्र, सूर्य आदि उत्पन्न क्यों नहीं होते?

और जिस-जिस के योग से जो-जो उत्पन्न होता है वह-वह ईश्वर के

उत्पन्न किये हुए बीज, अन्न, जलादि के संयोग से घास, वृक्ष और कृमि आदि उत्पन्न होते हैं; विना उनके नहीं। जैसे हल्दी, चूना और नींबू का रस दूर दूर देश से आकर आप नहीं मिलते; किसी के मिलाने से मिलते हैं। उस में भी यथायोग्य मिलाने से रोरी होती है। अधिक न्यून वा अन्यथा करने से रोरी नहीं होती। वैसे ही प्रकृति परमाणुओं को ज्ञान और युक्ति से परमेश्वर के मिलाये बिना जड़ पदार्थ स्वयं कुछ भी कार्यसिद्धि के लिये विशेष पदार्थ नहीं बन सकते। इसलिये स्वभावादि से सृष्टि नहीं होती, परमेश्वर की रचना से होती है।।9।।

(प्रश्न) इस जगत् का कर्त्ता न था, न है और न होगा किन्तु अनादि काल से यह जैसा का वैसा बना है। न कि इसकी उत्पत्ति हुई; न कभी विनाश होगा।

(उत्तर) विना कर्त्ता के कोई भी क्रिया वा क्रियाजन्य पदार्थ नहीं बन सकता। जिन पृथिवी आदि पदार्थों में संयोग विशेष से रचना दीखती है, वे अनादि कभी नहीं हो सकते। और जो संयोग से बनता है वह संयोग के पूर्व नहीं होता और वियोग के अन्त में नहीं रहता। जो तुम इस को न मानो तो कठिन से कठिन पाषाण हीरा और पोलाद आदि को तोड़, टुकड़े कर, गला वा भस्म कर देखो कि इनमें परमाणु पृथक्-पृथक् मिले हैं वा नहीं? जो मिले हैं तो वे समय पाकर अलग-अलग भी अवश्य होते हैं।।10।। *(क्रमशः)*

वेद प्रवचन

जीवन-यज्ञ

❑पं.शिव कुमार शास्त्री

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः।।

(अथर्व. 2/35/5)

शब्दार्थ-

(यज्ञस्य) मानव-जीवनरूपी यज्ञ के **(प्रभृतिः)** भरण-पोषण का साधन **(चक्षुः)** दर्शनशक्ति है **(मुखं च)** और मुख भी है। **(वाचा श्रोत्रेण मनसा)** वाणी से, कान से और मन से **(जुहोमि)** मैं हवन ही करता हूँ। **(इमं यज्ञं)** यह मेरा जीवन-यज्ञ **(विश्वकर्मणा)** जगत्-रचयिता प्रभु ने **(विततं)** विस्तृत किया है, इसमें **(देवाः)** सब देव, दिव्यभाव **(सुमनस्य- माना)** प्रसन्नतापूर्वक **(आयन्तु)** आवें, समाविष्ट हों।

व्याख्या-

वेद में प्रभु को यज्ञ नाम से पुकारा है। उसका बनाया हुआ यह संसार भी यज्ञरूप ही है। उसके इस विशाल संसार में मेरा जीवनरूपी यज्ञ भी उसी ने रचा है, जो सौ वर्ष तक चलनेवाला है। मेरी योग्यता इसमें है कि मैं इस शरीर में कोई अयज्ञिक कार्य न होने दूँ। यज्ञ दैव्य कर्म है और वेद की भाषा में **'अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या'**-यह आठ चक्र और नौ द्वारों वाली मेरी शरीररूपी देवपुरी है, अतः इस मन्त्र में मुख्य रूप से दो ही उपदेश हैं-पहला यह कि हम अपनी सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों से जो जानें और करें वह यज्ञरूप में हो, वह व्यक्ति और समाज की भलाई के लिए हो; दूसरी बात यह कि उत्तम विचार और आचार के हम इतने अभ्यस्त हो जावें कि सम्पूर्ण दिव्यभाव अपने निवास के लिए हमारी इस शरीरपुरी को प्रसन्नता और उत्सुकतापूर्वक अपने निवास के लिए चुनें।

महाकवि भर्तृहरि के अनुसार-'किसी पात्र की चुपचाप सहायता करना, अपने घर कोई आवे तो उसका हार्दिक सत्कार, किसी का उपकार करके दूसरों से उसकी चर्चा न करना, यदि किसी ने अपनी कोई सहायता की हो तो भरी सभा में उसकी सराहना करना, धन पर कभी घमण्ड न करना, दूसरों की चर्चा-प्रसंग में कभी उनकी निन्दा न करना, श्रेष्ठ व्यक्तियों का यह व्यवहार-मार्ग जो तलवार की धार पर चलने के समान कठिन है, किसने बनाया है?'

इन्हीं शुभकर्मों का नाम वास्तविक यज्ञ है। हवन में भी आहुतियों के लिए जो मन्त्र बोले जाते हैं, उनमें इन्हीं भावों का समावेश है। यदि उन व्यावहारिक मूल्यों की ओर विना ध्यान दिये जलती अग्नि पर घी-सामग्री डालने का नाम ही यज्ञ समझते हैं, तो यह कर्त्ता में दम्भ और घमण्ड ही उत्पन्न करेगा। यही कारण है कि 85 प्रतिशत कर्मकाण्डी दुरभिमानी होते हैं। वे छटांकभर घी और आध पाव सामग्री अग्नि में डालकर समझते हैं कि हमने स्वर्ग की सीट रिजर्व करा ली है। दूसरे हमारी तुलना क्या करेंगे? ऐसे कर्मकाण्डियों को लक्ष्य करके ही उपनिषद् में कहा-**'प्लवा ह्येते अदृढ़ा यज्ञरूपाः'**-संसार-सागर को पार करने के लिए ये चप्पू दुर्बल हैं। इनमें दृढ़ता उस याज्ञिक भावना से ही आवेगी।

मन्त्र में पहला उपदेश है कि मैं चक्षु की दर्शन-शक्ति से प्रभु के अद्भुत रचना-कौशल को देखकर उसका विश्वासी बनूं। सुन्दर युवा और युवतियों को देखकर हमें उसकी कारीगरी का सिक्का मानना चाहिए कि उसने इतने घटिया सामान से भरे पुतले में भी सौंदर्य का निखार और चमत्कार उत्पन्न कर दिया है। क्या ही बढ़िया किसी शायर ने कहा है-वो खुदा कैसा है जिसने इन हसीनों को बनाया है? इन्हें जब देखते हैं हम, तो उसकी याद आती है।

मैं इस चक्षु के प्रकाश से दूसरों को मार्ग बताऊँ। मैं इनकी सहायता से ज्ञानोपार्जन करके अपना और दूसरों का कल्याण करूं। **'मुखं च वाचा श्रोत्रेण जुहोमि'**-मैं मुख में निवास करने वाली वाणी से, उसमें रहनेवाले कानों से हवन ही करता हूं। मैं वाणी से मधुर भाषा बोलूं। पर-निन्दा राक्षसी वृत्ति है। राक्षस तो यज्ञ का ध्वंस करते हैं। समाज और घर निन्दा और चुगली से उजड़ जाते हैं। निन्दा की गन्दगी पसन्द करना काकवृत्ति है। एक संस्कृत के कवि ने कहा है-

न विना परिवादेन दुर्जनो रमते जनः।
काकः सर्वरसान् भुङ्क्ते विना मेध्यन्न तृप्यति।।

'बुरा व्यक्ति जबतक दूसरे की निन्दा न कर ले, उसे शान्ति नहीं मिलती। कौआ चाहे षड्रस व्यंजन खा ले, किन्तु जबतक वह अपनी चोंच गन्दगी में न डुबोए, उसकी तृप्ति नहीं होती।' वाणी से पर-निन्दा न करना बहुत बड़ा दैवीगुण है। इस विषय में भी संस्कृत के कवि ने बहुत उत्तम कहा है-

यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा।
परापवादशस्येभ्यो गां चरन्तीन्निवारय।।

'यदि केवल एक काम से ही संसार को तू अपने वश में करना चाहता है, तो दूसरों की निन्दारूपी फसल को चरने में रुचि रखनेवाली वाणीरूपी गौ को रोक ले!'

कानों से भी भद्र सुनना यज्ञ करना है। कान ज्ञानार्जन का आँख से भी बढ़कर साधन है। जन्मान्ध संसार के बहुत बड़े विचारक और विद्वान् हुए हैं, किन्तु जन्म से बहरा, गूँगा भी होगा, क्योंकि भाषा तो कानों से शब्द सुनकर उनकी अनुकृति पर ही बनती है। संसार में एक भी उदाहरण नहीं है कि कोई बहरा और गूँगा भी विद्वान् हुआ हो, अतः कानों से शुभ सुनना यज्ञ करना है।

आगे मन्त्र में कहा-'इमं यज्ञं विश्वकर्मणा विततम्'-यह मेरा जीवन-यज्ञ उत्तम साधन-सम्पन्न प्रभु ने विस्तृत किया है जो सौ वर्ष तक चलेगा, अतः इसमें 'देवाः सुमनस्य माना आयन्तु'-सब दिव्यभाव प्रसन्नतापूर्वक निवास करें। यही मेरे जीवन-यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

www.thearyasamaj.org

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-६६

गृहीतं त्वस्माभिः किमपि कमनीयं यवनतो
गता तेभ्योऽस्माकं गुरुतममतिः पश्चिमदिशि।
स एवायं कालः प्रतिदिनमहो पश्चिमभुवि
महोत्कण्ठो लोकोऽनवरतमपश्यद् भुवमिमाम्।।

हमने यवनों से यह सब ग्रहण किया
जो उनका सर्वाधिक कमनीय था !
और यूनानियों द्वारा पश्चिमी देशों को
हमारा ज्ञान मिला जो
उनके लिए गौरवशाली और महत्वपूर्ण था !!
यही वह समय था जब
योरोपवासी
बड़ी उत्सुकता के साथ भारत को
देखने की इच्छा करते थे
और इसके लिए कल्पनायें करते थे।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

होता सदस्य परिचय-57

सिद्धान्त को व्यवहार में बदलने वाले

महात्मा प्रेम मुनि वानप्रस्थी

(पं.प्रेमशंकर शुक्ल)

जीवनवृत्त उन्हीं के शब्दों में

वैदिक विचारों से ओतप्रोत परिवार में मेरा जन्म दिनांक 10 नवम्बर, 1947 को रायबरेली नगर में हुआ। पितामह पं. सत्यनारायण शुक्ल एडवोकेट जिन्होंने रायबरेली आर्य समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और पिता पं.जयदेव शुक्ल जो आर्य समाज रायबरेली में आजीवन पदाधिकारी रहे, के संरक्षण में लालन पालन एवं शिक्षा दीक्षा सम्पन्न हुई।

फीरोज़ गाँधी महाविद्यालय रायबरेली से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के उपरान्त बैंक ऑफ बड़ौदा में 2 नवम्बर 1970 को सेवा प्रारम्भ की। विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए बैंक की 31 वर्षों की सेवा करके मार्च 2001 में वरिष्ठ प्रबन्धक के पद से सेवा निवृत्ति ग्रहण की। वर्ष 1990 में गृह जनपद रायबरेली से लखनऊ में स्थायी निवास बनाया।

विवाह 13 जून 1973 को लखनऊ में श्रीमती लिली शुक्ला जो कि वैदिक सिद्धान्तों में अटूट निष्ठा रखती थीं और धार्मिक विचारों से निहित थीं, के साथ हुआ। कालान्तर में दो पुत्रियों के जन्म के साथ पारिवारिक विस्तार हुआ। दोनों पुत्रियों में से ज्येष्ठ पुत्री शिखा का विवाह श्री रतन मिश्रा जो कि वर्तमान में हिन्दुस्तान टाइम्स में सहायक महाप्रबन्धक हैं के साथ व कनिष्ठ पुत्री स्वपनिल का विवाह श्री ज्ञान प्रताप जो कि स्वयं व्यवसायी हैं के साथ क्रमशः वर्ष 1998 व 2004 में जुआ। सहधर्मिणी श्रीमती लिली शुक्ला का आकस्मिक निधन दिनांक 9 जनवरी 2007 को लखनऊ में हो गया।

वर्तमान में आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं वेद प्रचार में योगदान दे रहा हूँ और आर्य समाज डालीगंज लखनऊ के प्रधान पर पर कार्यरत हूँ। दिनांक 17 अक्टूबर, 2015 को स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से वानप्रस्थ दीक्षा प्राप्त की। यह घड़ी हमारे जीवन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में आई और मुझे और अधिक स्वाध्याय तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार तथा वैदिक सिद्धान्तों में संलग्न होने का परमपिता परमात्मा ने सुअवसर प्रदान किया।

विगत 16 से 20 सितम्बर 2015 में आर्य समाज डालीगंज के शताब्दी समारोह में सार्थक भूमिका निभाने का अवसर मेरे प्रधान पर पर रहते हुए मिला। निवास पर दैनिक यज्ञ तथा योगाभ्यास निरन्तर चल रहा है।

ऋषि उद्यान अजमेर में वर्ष 2013 में ध्यान प्रशिक्षक का प्रशिक्षण प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करके प्राप्त किया। विभिन्न स्थानों में ध्यान प्रशिक्षण देने का कार्य कर रहा हूँ। ऋषि उद्यान अजमेर में होने वाले सभी योग साधना शिविरों में नियमित रूप से भाग लेता हूँ। इसके अतिरिक्त बैंक आफ बड़ौदा रिटायर्ड आफिसर्स एसोसिएशन का आंचलिक सेक्रेटरी उ.प्र. के दायित्व का भी सम्भाल रहा हूँ। सम्प्रति मैं आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार से सम्बद्ध हूँ।

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

दयानन्द और....

नहीं है। आप उनका अध्ययन उनके तरीके से ही कर सकते हैं। मैं यह तो नहीं कहूँगा कि अपने तर्कों में वे परस्पर विरोधी हैं, परन्तु वह वह हिन्दू नहीं हैं जिसे आजकल के हिन्दू महिमा मण्डित कर रहे हैं। और इसीलिए विवेकानन्द हिन्दुओं को, ईसाई या मुस्लिम बनने से नहीं बचा सकते। विवेकानन्द ईसा मसीह को प्रेम करते हैं, आदर भी करते हैं, वे ईसाइयों को भी प्रेम करते हैं, परन्तु किसी भी अवस्था में वे ईसाई नहीं हैं और न ही वे किसी भी कीमत पर ईसाई बनना पसन्द करेंगे। परन्तु यदि कोई हिन्दू ईसाई बनता है तो उन्हें इसमें कोई आपत्ति भी नहीं है। आपको विवेकानन्द को उनके दृष्टिकोण से ही पढ़ना होगा।

('ज्ञानसुधा' से साभार)

अत्यावश्यक

आर्य लोक वार्ता हेतु सहयोग राशि कैसे, कहाँ जमा करें

१. 'आर्य लोक वार्ता' के प्रत्येक अंक में पृष्ठ सं. ८, कालम-५ पर सहयोग राशि के नीचे दो बैंकों के पते दिये गये हैं। सुविधानुसार किसी भी एक बैंक में दिये गये विवरण के अनुसार जमा पर्ची भर कर अपनी श्रेणी की निर्धारित सहयोग राशि जमा कर दें तथा हमें मोबाइल अथवा पोस्ट कार्ड लिखकर सूचना दे दें ताकि आपको रसीद भेज दी जाय।

२. सहयोग राशि- शिविर कार्यालय-१६/८३८ प्रथम तल, रिंग रोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-२२६१६ पते पर स्वयं पहुँचा सकते हैं अन्यथा उक्त पते पर मनीऑर्डर कर दें। (१००रु.से कम मनीऑर्डर अथवा सहयोग राशि स्वीकार्य नहीं है।)

३. सहयोग राशि यदि १००रु. है तो रसीद अगले अंक में संलग्न कर भेजी जाती है किन्तु सहयोग राशि इससे अधिक है तो पृथक् लिफाफे में रखकर भेजी जाती है।

४. इसके अतिरिक्त आर्य लोक वार्ता के निम्न लिखित स्वाध्याय केन्द्रों पर संयोजक के पास भी सहयोग राशि जमा कर सकते हैं-

स्वाध्याय केन्द्रों के संयोजकों के नाम और पते

१. श्री पाल प्रवीण-एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ-२२६०२४, मो.७३०६८८२०५८१

२. आचार्य आनन्द मनीषी-सी-१२७१, राजाजी पुरम्, लखनऊ-२२६०१७, मो.६६३५३६१७६४

३. श्री आत्मप्रकाश बत्रा-प्रधान, आर्यसमाज, आदर्शनगर, आलमबाग, लखनऊ-२२६००५ मो. ६६३५२४०८६६

४. श्री रणसिंह-प्रधान आर्यसमाज, चन्द्रनगर, आलमबाग, लखनऊ-२२६००५, मो. ६४१५७५६८६६

५. श्री डोरीलाल आर्य-१, वैशाली इन्क्लेव, आर्य समाज, इन्दिरा नगर, लखनऊ-२२६०१६

६. श्री ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी-पूर्व प्रधान आर्य समाज चौक, जनरैलगंज, लखनऊ, मो. ६४५०६४३९६६

७. श्रीमती रामा आर्य 'रमा'-(कवयित्री), ४१७/१०, नेवाजगंज (चौक), लखनऊ-२२६००३ मो.६६१६७६०२६४

८. डॉ.मोहनलाल अग्रवाल-(आ.स.लालबाग) -ए-७८६, इंदिरानगर, लखनऊ, मो.६४५४७१११३८

९. श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी'- १५०, नई बस्ती, सीतापुर-२६१००१, मो.९७६३२६६८२६

१०. डा.सत्यप्रकाश-प्रकाश होम्यो हाल, सदर बाजार, संडीला, जिला हरदोई, मो.६४५०८५८७५०

११. डा.जी.पी.सिंह चंदेल-एल.आई.जी.-११३, बर्रा-४, कानपुर-२०८०२७, मो.६४५०१२५६९४

-सम्पादक

अक्षर लोक

कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य के 80वें जन्मदिवस पर टाण्डा (अम्बेडकर नगर, उ.प्र.) में आयोजित विशद अभिनन्दन कार्यक्रम के अवसर पर उन्हें **'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रन्थ'** समर्पित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा (बंगाल), डी.ए.वी.एकेडमी तथा मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कॉलेज (टाण्डा, अम्बेडकरनगर) के सौजन्य से प्रकाशित इस नयनाभिराम, महत्वपूर्ण और संग्रहणीय ग्रन्थ का कुशल सम्पादन डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पं.दीनानाथ शास्त्री तथा डॉ. वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक) द्वारा किया गया।

अभिनन्दन ग्रन्थ 'आदि पर्व' के साथ-साथ अन्य पाँच पर्वों में विभाजित है। 'आदि पर्व' के अन्तर्गत 'वेदामृतम्' में इन पंक्तियों के लेखक अमृत खरे का वैदिक काव्यानुवाद 'तू सकल ऐश्वर्य मेरा!' (सा.पू.3/16/9) तथा सम्पादकीय 'सम्भवामि युगे युगे' (डॉ.वेद प्रकाश आर्य) प्रकाशित है। इस खण्ड में सर्वत्यागी दयानन्द के दुर्लभ चित्र (सन् 1867) के साथ-साथ श्री आनन्द कुमार आर्य, उनकी सहधर्मिणी श्रीमती मीना आर्य, श्रद्धेय पिता बाबू मिश्रीलाल आर्य, माताश्री रामप्यारी देवी, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती और महात्मा आर्यभिक्षु के रंगीन और मनोहारी चित्र उपलब्ध हैं।

सम्पादकीय 'सम्भवामि युगे युगे' में डॉ.वेद प्रकाश आर्य लिखते हैं कि बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अपने तप-त्याग, धर्मनिष्ठा और सुदृढ़ संकल्पों द्वारा टाण्डा-अम्बेडकरनगर परिक्षेत्र को आलेक मण्डित करने वाले स्वनामधन्य, प्रातःस्मरणीय बाबू मिश्रीलाल आर्य का स्वर्गारोहण...कालरात्रि बनकर आया था।...बाबूजी द्वारा संरक्षित-संचालित...प्रख्यात संस्थाओं का भविष्य....संदेहों के घेरे में आ गया था।...उसी समय कुछ दैवी शक्तियों की पूर्व योजना...के कारण उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य ने आकर कालरूपी अश्व की वल्गाओं को थाम लिया।....

....आनन्द जी ने सर्वप्रथम टाण्डा के आर्य संस्थानों के आन्तरिक और बाह्य दोनों रूपों को सुन्दर और सुव्यवस्थित किया।....आर्य समाज टाण्डा के शताब्दी समारोह (1992) और बाबू मिश्रीलाल आर्य जन्मशती समारोह (2002) में आनन्द बाबू के संयोजन-शिल्प का अनूठा सौंदर्य निखर उठा।

....कैप्टेन देवरत्न आर्य के प्रधानत्व काल में आनन्द बाबू सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के वरिष्ठ उपप्रधान बने। कुछ काल पश्चात उन्हें कार्यकर्ता प्रधान का दायित्व सौंपा गया। आनन्द बाबू के कार्यकाल में तीन बड़े अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों का आयोजन सम्पन्न हुआ।...इन सम्मेलनों में आनन्द बाबू के भाषणों और सन्देशों का प्रकाशन हुआ।...

आनन्द बाबू ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विघटन को रोकने का भागीरथ प्रयास और पुरुषार्थ किया।....आनन्द बाबू का परिवार विशद है और सभी को एकजुट रखने का श्रेय उन्हें प्राप्त है।....पश्चिम बंगाल, कोलकाता आपका कार्यालय है, टाण्डा आपका घर है और दिल्ली आपका कार्यक्षेत्र है।

डॉ.आर्य लिखते हैं कि आनन्द बाबू अपने आप में एक संस्था हैं।... उन्होंने नारी शिक्षा, समाजोत्थान, सद्भावना, सामरस्य विस्तार तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पटल पर आर्य संस्कृति की पताका फहराने से लेकर 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसे विश्व साहित्य के गौरव ग्रन्थ की मान-मर्यादा, गरिमा, स्मिता को संरक्षण प्रदान करने वाले महत्कार्य को सम्पादित किया है।

'ग्रन्थ के प्रथम पर्व 'संदेशामृतम्' के अन्तर्गत अनेक महानुभावों के सन्देश प्रकाशित हैं। द्वितीय पर्व 'काव्यामृतम्' के अन्तर्गत डॉ.विशुद्धानन्द मिश्री, डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ', डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी', रामा आर्य 'रमा', आभा मिश्रा, प्रो.विश्वम्भर शुक्ल, डॉ.मिर्जा हसन नासिर, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', दयानन्द जड़िया 'अबोध', सियाराम 'निर्भय', राजाभइया गुप्ता 'राजाभ' और बाँके बिहारी 'हर्ष' की पठनीय कविताएँ संस्कृत-हिन्दी में उपलब्ध हैं।

ग्रन्थ के तृतीय पर्व 'विद्वत्-लेखामृतम्' के अन्तर्गत बाबू आनन्द कुमार आर्य के व्यक्तित्व और कृतित्व को रेखांकित करते सर्वश्री पी.एन.मिश्रा, अमिताभ आर्य, सबकदर आलम, डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ.प्रशस्य मित्र शास्त्री, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, अशोक आर्य, आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र, डॉ. सोमदेव शास्त्री, आचार्य हनुमत्प्रसाद, प्रो.शैलेन्द्रनाथ कपूर, भूपेन्द्र नाथ मेहरोत्रा, वीरेन्द्र कुमार आर्य, सत्य प्रकाश आर्य और ममता जायसवाल के आत्मीय लेख आकर्षित करते हैं।

ग्रन्थ के चतुर्थ पर्व 'आत्माभिव्यंजनामृतम्' के अन्तर्गत आनन्द कुमार आर्य के कतिपय लेख प्रस्तुत हैं। 'मेरी जीवन यात्रा : उतार, चढ़ाव, संघर्ष और विजय की गाथा' लेख सभी पाठक उत्सुकतापूर्वक पढ़ना चाहेंगे। आनन्द जी के अन्य लेख 'सत्यार्थ प्रकाश की अस्मिता एवं सुरक्षा के उपाय', 'आर्य समाज टाण्डा : दशा और दिशा' तथा 'मेरे पिता : एक पुण्य स्मरण' पठनीय, मननीय और पाठकों के लिये पथप्रदर्शक जैसे हैं। वैसे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मारीशस, पोर्ट लुइस (2008) के अवसर पर विश्व के आर्य समाजों के नाम आनन्द बाबू के सन्देश और 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' की स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर आनन्द बाबू का अध्यक्षीय भाषण न केवल ऐतिहासिक, मील के पत्थर और ओजस्वी हैं वरन् विचारशील आर्य के लिये पूंजी समान हैं। इनका प्रकाशन इस ग्रन्थ की उपलब्धि है।

ग्रन्थ का पंचम पर्व 'चित्रामृतम्' है, जो आनन्द जी को समझने में पूर्णतया सहायक है। सम्पूर्ण ग्रन्थ उपयोगी और संग्रहणीय है। सम्पादन में सामग्री, प्रस्तुति और प्रकाशन की समझ, लगन और परिश्रम साफ झलकता है। सम्बद्ध सभी पक्ष बधाई के पात्र हैं। ●

www.thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

जनपद अम्बेडकरनगर के टाण्डा परिक्षेत्र में शिक्षा एवं समाज सुधार की मशाल प्रज्ज्वलित करने वाले जनप्रिय श्री आनन्द कुमार आर्य के ८०वें जन्म दिवस के अवसर पर प्रकाशित 'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रन्थ' को पढ़कर अन्तरात्मा पुलकित हो उठती है। विशेषकर आपका सम्पादकीय- 'सम्भवामि युगे युगे' तो अपूर्व अनुपम है। यह सम्पादकीय प्रमाणित करता है कि आप सम्पादकों में ज्येष्ठ-वरिष्ठ हैं तथापि आप जब बात करते हैं तो लगता है जैसे कोई बच्चा बोल रहा हो। आपकी निश्छलता और निरभिमानता आपका विशिष्ट एवं दुर्लभ सद्गुण है।

मैं आपसे क्षमाप्रार्थी हूँ, क्योंकि जिन दिनों आप ग्रन्थ के सम्पादन कार्य में व्यस्त थे तो मैं तमाम पृच्छाओं से आपको परेशान करता रहा- किन्तु अब इस ग्रन्थ को पढ़कर मुझे यह प्रतीत हो रहा है कि आप सचमुच 'ऊढ़ गुरुभार' सँभालने वाले मूर्तिमान मेरे सामने हैं। 'आर्य लोक वार्ता' में भले ही कहीं त्रुटि मिल जाती हो किन्तु मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि 'कमयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रन्थ' में कहीं भी प्रूफ सम्बन्धी कोई त्रुटि नहीं है। काश, अन्य विद्वान् समझ पाते कि मैं क्यों कर डॉ.वेद प्रकाश आर्य को श्रेष्ठ मानता हूँ। शताब्दी समारोह २०१५ में जो ग्रन्थ प्रकाशित हुआ था, उसमें अनेक त्रुटियाँ थीं; शायद उसके आप प्रधान सम्पादक नहीं थे। उन त्रुटियों के परिष्कार का कोई प्रयास नहीं किया गया था और न उन त्रुटियों का किसी ने कोई संज्ञान लिया।

-बाँके बिहारी 'हर्ष'
अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

***

'आर्य लोक वार्ता' के जनवरी मास के आद्योपान्त सुसज्जित अंक को पढ़ा। महर्षि दयानन्द की तरह यह मासिक पत्र भी वर्तमान समाज में सम्व्याप्त विसंगतियों को अकेला ही ललकार रहा है। प्रमाणस्वरूप मुखपृष्ठ के अग्रलेख को लें, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी लेखक यशःशेष प्रकाशवीर शास्त्री ने 'देश स्वराज्य-सुराज्य से आगे रामराज्य की ओर बढ़े' के माध्यम से सम्पूर्ण देश के जिम्मेदार लोगों को प्रेरित किया है। निश्चितया लेख की विषय वस्तु वैदुष्यपूर्ण प्रासंगिक एवं ज्ञानवर्द्धक है। मुखपृष्ठ की यह सामग्री मासिक पत्र के आन्तरिक कलेवर की गम्भीरता, उपादेयता एवं जीवंतता को बयां कर रही है। भारतेन्दु जी ने ठीक ही कहा है कि मनुष्य की बाह्य आकृति मन की एक प्रतिकृति होती है। कविवर अमृत खरे ने 'विनय पीयूष' में पाण्डित्यपूर्ण काव्यानुवाद द्वारा प्रभु की अमरवाणी वेद के महात्म्य को उद्घाटित किया है। उन्हें साधुवाद! 'वेद प्रवचन' में पं.शिवकुमार शास्त्री जी ने अपने सहज, सरल एवं सुबोध शैली से मन्त्र की व्याख्या करते हुए तीन देवियों को जिस तरह देश और समाज से सम्बद्ध किया है वह वन्दनीय है। मैं अविभूत हूँ डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक' की संक्षिप्त जीवनगाथा पढ़कर, वह निश्चित ही एशिया महाद्वीप के प्रकाश स्तम्भ हैं। 'काव्यायन' में मंचीय-व्याख्यान कालाकोविद पं.अटलबिहारी वाजपेयी द्वारा प्रणीत रचना पढ़ी। निश्चितया कविता भी कालजयी और कवि भी। मैं अन्त में किन्तु अल्प नहीं, इस मासिक पत्र के प्रधान सम्पादक जो हिन्दी के आधिकारिक विद्वान् हैं, ने सम्पादन में अपनी तपःतूलिका से विज्ञानी (विजानन्) मनुष्य द्वारा कृत लोकोपकारी कर्म को जिस तरह सोदाहरण यज्ञ की उत्कृष्टतम् आहुति बताया है, वह उनकी कुशल अध्यापन, सम्पादन तथा अनुसन्धान क्षमता का परिचायक है। हमें ऐसे व्यवहार, वैदुष्य एवं लेखन कला से सर्वप्रिय व्यक्तित्व पर गर्व है।

-डॉ.सत्यकाम आर्य
5/118, जानकीपुरम विस्तार, लखनऊ-226031

***

'आर्य लोक वार्ता' का जनवरी २०१७ अंक प्राप्त हुआ। रंगीन मुखपृष्ठ से सजा यह अंक बहुत ही लाभकारी लग रहा है। लगभग अर्द्ध शतक पूर्व लिखा गया स्व.प्रकाशवीर शास्त्री का लेख 'देश भक्तों को साम्प्रदायिक बताकर सच्ची राष्ट्रीयता को कुचला न जाय।' बड़ा ही अच्छा व सामयिक लेख था जो इतना समय व्यतीत हो जाने के पश्चात आज भी अपनी उपयोगिता दर्शा रहा है इसी कारण सम्पादक जी ने इसे मुखपृष्ठ पर अंकित किया है। सम्पादकीय ईश्वर पर विश्वास और कर्मनिष्ठा पर बल देता है जिसमें अनेक उदाहरणों से अपने कथ्य को पुष्ट किया गया है जिनमें लखनऊ की गोमती नदी में डूबते व्यक्ति की युवक अभिनव द्वारा प्राण-रक्षा, प्रेमचन्द की कहानी 'सबसे बड़ा हाजी', 'यज्ञवल्क्य', 'रमेश चन्द्र तिवारी' आदि के प्रसंग प्रमुख हैं। सम्पादक जी ने अपने कथन की पुष्टि में 'शतपथ ब्राह्मण' व 'तैतरीय उपनिषद' का भी उल्लेख किया है। जबकि वह स्वयं इस समय अपनी सहधर्मिणी के कूल्हे के अस्थि भंग से परेशान हैं। इस अंक में लेख, वेद प्रवचन व सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१७२ के साथ उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' की रचना 'स्वप्न सुराज के टूट रहे हैं' अच्छी है। अंक पठनीय व संग्रहणीय है।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

देश को स्वाधीन कराने में महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की महती भूमिका सूर्य की भांति जाज्वल्यमान है। तत्कालीन देशभक्तों में आर्यसमाज की राष्ट्रीय विचार धारा ने संजीवनी शक्ति भर दी थी। आर्य लोक वार्ता के जनवरी अंक में आमुख लेख के रूप में यशस्वी राष्ट्रभक्त प्रकाशवीर शास्त्री के तथ्यपूर्ण विचार हृदय को सगर्व उद्वेलित करते हैं किन्तु खेद है कि राष्ट्र निर्माण में ऐसे अप्रतिम योगदान को अपेक्षित ख्याति नहीं मिल सकी। वस्तुतः स्वाधीनता इतिहास के पुर्नमूल्यांकन की आवश्यकता है। प्रकृति के साक्षात् शाश्वत देवता सूर्य से परिचय काव्यानुभूति हेतु अमृत खरे को कोटिशः साधुवाद। सम्पादकीय में यश-अनुष्ठान की केन्द्रीय भावना का प्रभावी दिग्दर्शन कराया गया है जो जीवन मूल्यों को पुर्नस्थापित करने की प्रेरणा देता है। डॉ.रूपचन्द्र दीपक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व नमनीय एवं प्रेरणादायी लगा। सचमुच वे आर्य समाज के प्रकाशमान 'दीपक' हैं।

'काव्यायन' में भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की हस्तलिपि में कविता सत्य उद्भासित करती है। अन्य प्रस्तुतियों में श्री महेशचन्द्र द्विवेदी, उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ', डॉ.कैलाश निगम, नरेन्द्र भूषण आदि की रचनाएँ सशक्त लगीं। अन्तिम पृष्ठ पर लोक प्रचलित नववर्ष का सुरुचिपूर्ण नामकरण सुखद है। आर्य पर्वों की सूची भी आर्यजन के लिए उपयोगी रहेगी। रंगीन और स्निग्ध पृष्ठों से पत्र की गरिमा में वृद्धि हुई है, एतदर्थ आपके सद्प्रयास एवं सक्षम लेखनी के प्रति नतमस्तक हूँ। होली एवं नवसंवत्सर की अनेक शुभकामनाएँ!

बने देश के श्रेष्ठ नागरिक, मानव मन से आर्य हों। 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' पूरित जीवन के शुभकार्य हों। होली हृदय-मिलन का अवसर है, नव संवत्सर नव आशा, शांति-समृद्धि 'विनम्र' प्राप्ति हित, कर्म-धर्म अनिवार्य हों।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिलनगर, विकास नगर, लखनऊ-22

***

'आर्य लोक वार्ता' का जनवरी अंक अत्यंत मनोहारी लगा। इसके रंगीन पृष्ठों से इसकी सुन्दरता में चार चाँद लग गये हैं। इस सुखद परिवर्तन के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद। मुखपृष्ठ पर विद्वान प्रकाश वीर शास्त्री के खोजपूर्ण आलेख में आर्य समाज के भारत को स्वतंत्र कराने में जो महान योगदान किया गया है, वह सचमुच एक अद्भुत सत्य को अनावृत्त करता है। लेख समसामयिक होने के साथ सद्भावना से ओतप्रोत है। 'श्रेष्ठ कर्म की श्रेष्ठतम आहुति' में दिये विचारों ने हृदय झकझोर दिया। यह सम्पूर्ण मानव जाति के लिए दिशा वाहक है। अन्य धारावाहिक चिन्तनपूर्ण विषयों से परिपूर्ण हैं जिसका एक-एक शब्द अनुकरणीय है। 'वाचनालय से' में तथा 'विनय पीयूष' में अमृत खरे जी का संदेश परक चिन्तन सराहनीय है। काव्यायन तो अनूठा पृष्ठ है जिसकी सभी कविताएँ बार-बार पठनीय ही नहीं अपितु मननीय हैं। अन्त में आर्यपर्वों की सूची विशेष उल्लेखनीय है जिसमें वर्ष भर की जानकारी दी गयी है। यह लघु पत्र सचमुच 'गागर में सागर' है।। होली की शुभकामनाओं सहित।

-नमिता वैश्य
सहायक अध्यापक, खालेगांव, गोण्डा (उ.प्र.)

***

'आर्य लोक वार्ता' मई २०१६ का अंक मुझे देखने को मिला। इस अंक में डॉ.वेद प्रकाश जी के हृदयोद्गार श्री पाल प्रवीण की अमृत जयन्ती पर लिखे 'श्रद्धा, शक्ति और त्याग की त्रिवेणी श्री पाल प्रवीण' शीर्षक आलेख है। आर्य लोक वार्ता का प्रत्येक अंक अपनी तरह का एक विशिष्ट विशेषांक है। इसमें धर्म आध्याम तथा साहित्य का संगम है। भारतीय वैदिक विचारों का दर्पण होते हुए शाश्वत आर्य आदर्शों का इसमें छवि दर्शन है। धन्य हैं इसके लेखक, कवि तथा सम्पादक।

-सुरेन्द्र नाथ पाण्डेय 'मनीष'
बाँदा (उ.प्र.)

***

प्रेरक अनुष्ठान

'आनन्दार्यामृताभिनन्दनम्'

आदरणीय मित्र श्री पाल प्रवीण जी के माध्यम से 'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन-ग्रंथ' सुलभ हुआ। इसमें संकलित 'ANAND BABU - A TRUE YOGI' लेख में श्री परमेश्वर नाथ मिश्र जी ने 'गीता' के जिस 'योगःकर्मसुकौशलम्' सूत्र का उल्लेख किया है उसको श्री आनन्द कुमार आर्य जी ने जिस यथार्थ में जिया है उसके सविवरण प्रस्तुतीकरण में डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने भी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है, जो-

''हैं दान, भोग या नाश, तीन गति धन की
उत्तम, मध्यम या अधम, मनुज जीवन की
जिसने तीनों में किया प्रथम का साधन
देता जग उसको सदा, अर्घ्य-आराधन''

के सर्वथा अनुरूप है, तथा-

''हुआ जिस देश-जाति के बीच योग्यता प्रतिभा का सम्मान
हुआ उसका अपूर्व उत्कर्ष, प्रगति के खुले अगिन सोपान
रहा हो जो कोई भी हेतु, परिस्थितियाँ यदि हुईं विलोम
हुआ तब अधोमुखी वह देश, घिरे सन्त्रास विकट तम तोम''

के अनुसार पात्र व्यक्तित्वों के प्रति अनौत्सुक्य, उपेक्षा, अवमानना के दुष्परिणामों से सचेत भी करता है।

इस अभिनन्दन-ग्रंथ जैसे आयोजनों की प्रासंगिकता सदैव विद्यमान रहती है।

इससे सन्दर्भित महानुभाव के विषय में तो पाठक अभिज्ञ होते ही हैं, अन्यान्य दबी छिपी कुछ विभूतियों से भी मूल्यवान् परिचय सुलभ हो जाता है जिसके यथावश्यकता अवसरोचित पारस्परिक समाजोन्मुख सदुपयोग की सम्भावनाओं के द्वार खुलते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ श्री आनन्द कुमार आर्य जी की सुसम्पन्न समाजसेवी पृष्ठभूमि, उदार भावना, स्पष्ट विचारधारा, उद्देश्य, योजना, शैली तथा ठोस कार्यों का सविस्तार चित्रण है तो दूसरी ओर धर्मपरायण, कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिकों का एक सार्थक मंच व चिन्तनपरक सम्मेलन है जो भौतिक सुख सुविधा सम्पन्न लोगों की ऐसी गतिविधियों के प्रति व्यर्थता व उदासीनतामूलक मानसिकता को न केवल दृढ़तापूर्वक नकारता है वरन् इस प्रकार के अधिकाधिक अनुष्ठानों की दिशा में प्रेरित और प्रवृत्त करने में भी सक्षम है। बहुत स्वाभाविक है कि ग्रन्थ का अधिकांश श्री आनन्द कुमार आर्य, उनके परिजन तथा सम्बन्धीजन द्वारा आधिकारिक व प्रामाणिक सामग्री के रूप में है किन्तु उनके मित्रों, शुभचिन्तकों, सहयोगियों द्वारा भी उनकी कृति, प्रकृति का अत्यन्त सदाशयी, सराहनापूर्ण, दृष्टान्ताधारित मूल्यांकन किया गया है। प्रसिद्ध धर्माचार्य, राजनेता, उद्योगपति, व्यापारी, अधिकारी, विधिवेत्ता, चिकित्साविद् आदि से इतर सर्वश्री- डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डा.प्रशस्यमित्र शास्त्री, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र, डा.सोम देव शास्त्री, आचार्य हनुमत्प्रसाद, डा.शैलेन्द्र कुमार कपूर प्रभृति विद्वानों द्वारा आनन्द कुमार आर्य जी के अवदान का शुर्भेषी आकलन ग्रन्थ को विशेष गरिमा, गम्भीरता, विश्वसनीयता प्रदान करता है। आनन्द जी के पिताश्री मिश्रीलाल आर्य जी की मुस्लिम बालिकाओं को शिक्षित करने की चिन्ता, डॉ.मिर्जा हसन नासिर की कविता तथा सबकदर आलम, एडवोकेट का लेख इस ग्रन्थ के सम्प्रदायनिरपेक्ष, समाजचेता स्वरूप की प्रतिष्ठा करतें हैं। ग्रन्थ में धर्म, संस्कृति, शिक्षा, संस्था, सभा, संगठन, सेवा, राजनीति, गुट, शासन, प्रशासन, स्वावलम्बन, विकास, व्यापार आदि विषयों का प्रसंगानुकूल समावेश हुआ है जो दैनिक जीवन में सफलता हेतु व्यावहारिक मार्गदर्शन कराता है। श्री अमिताभ आर्य का लेख 'My Father Shri Anand Kumar' विशेष सुखद है क्योंकि पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त तथाकथित प्रगतिशील सन्तानें उत्तराधिकार में प्राप्त वंशगौरव, सम्पत्ति, समृद्धि का उपभोग तो मजे से करती हैं किन्तु पैतृक आदर्श, सिद्धान्त, परम्परा और भावनाओं से जुड़ने में ने केवल संकोच अनुभव करती हैं वरन् उनका उपहास व तिरस्कार भी करती हैं। अमिताभ जी ने अपने पिताश्री की इच्छाओं, आकांक्षाओं और संस्कारों को आत्मसात् ही नहीं किया अपितु पाठकों को स्पष्टता से सम्प्रेषित करते हुए उन पर निष्ठापूर्वक आचरण व क्रियान्वयन के प्रति आश्वस्त भी किया है जो बहुत वांछनीय, अनुकरणीय तथा स्वागतेय है। कदाचित् उन्होंने 'सम्पादकीय' में निहित ''एक पीढ़ी के श्रेष्ठ संस्कार कैसे अगली पीढ़ी में रूपान्तरित होते हैं; इसका मिश्रीलाल आर्य और आनन्द कुमार आर्य से बढ़कर उत्तम उदाहरण कहाँ मिलेगा?'' चुनौती को नीरवता, विनम्रता और दृढ़ता से स्वीकार कर लिया है। शुभाशंसा!

ग्रन्थ की आकर्षक साज-सज्जा, रमणीयक चित्रावली, उत्कृष्ट सामग्री की अद्भुत पर्व-योजना, विद्वत्सम्पर्क-बहुलता हेतु सम्पादक-मण्डल को बधाई। अभिनन्दित श्री आनन्द कुमार आर्य को स्वस्थ 'जीवेम् शरदः शतम्' की शुभकामनाएँ तथा सुहृद् सहयोगीजन को प्रणाम!

-कौशल कुमार
ग्राम-बहजादका, डा.-पिलौना, मेरठ-250 401 (उ.प्र.)

***

www.thearyasamaj.org

धारावाहिक-(70)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

अब हमें यह देखना चाहिए कि किस प्रकार के मनुष्य अपनी किन विभूतियों के कारण संसार में गण्य-मान्य और धन्य माने जाते हैं।

३-धन्य कौन है?

(क) स्वात्माभिमानी:- स्वात्माभिमानी पुरूष धन्य है। स्वात्माभिमानी वह है जो प्रत्येक अवस्था में आत्मसम्मान का ध्यान रखता है। उसका आदर्श महानस्वी कर्ण के इन शब्दों से समझा जा सकता है-

मद्विधस्यायशस्यं हि न युक्तं प्राणरक्षणम्।
युक्तं हि यशसा युक्तं मरणं लोकसम्मतम्।।

-वनपर्व

अर्थात्- मुझ-जैसे मनुष्य का अपकीर्ति के साथ प्राणों की रक्षा करना उचित नहीं है; कीर्ति के साथ तो मर जाना भी अच्छा है- ऐसा ही संसार मात्र का मत है। महाभारत में अन्यत्र भी कहा है कि जबतक माननीय पुरूष मान पाता रहता है, तबतक ही व जीवित है; ज्योंही उसे घोर अपमान सहना पड़ा, त्योंही वह मृतक माना जाता है।-

यदा मानं लभते माननार्हस्तदा स वै जीवति जीवलोके।
यदावमानं लभते महत्वं तदा जीवन्मृत इत्युच्यते सः।।

-कर्णपर्व

स्वात्माभिमानी वह है जो घोर संकट में भी प्रबल शत्रु या अन्यायी अथवा नीच पुरूष के आगे दीन एवं नतमस्तक नहीं होता। ऐसा व्यक्ति जीवन या सम्पत्ति के मोह से कभी किसी के सामने आत्म-समर्पण नहीं करता। विद्वानों के मत से 'संसार में वे ही लोग धन्य हैं जो विपत्ति में पड़ जाने पर भी दीनता से प्रेरित होकर धन से मलिन चित्त वाले पुरूषों के आँगन में कभी नहीं जाते।-

विपद्यपि हि ते धन्या न ये दैन्यप्रणोदिताः।
धनैर्मलिनचित्तानामालभन्तेऽङ्गनं क्वचित्।।

-स्कन्दपुराण

स्वात्माभिमानी वह है जो सरकारी पदों से भी अधिक परम पद का ध्यान रखता है। वह काठ के पदों पर नहीं, अपने पदों पर खड़े होकर आत्मबल के सहारे वह अपना मस्तक ऊँचा किये रहता है और कर्त्तव्य करता है। जहाँ बाह्य विवशताओं के कारण साधारण मनुष्य मन से हारकर कर्त्तव्य-विमुख हो जाते हैं, वहां स्वाभिमानी पुरुष लेशमात्र भी विचलित नहीं होता। राम ऐसे ही महापुरुष थे। उनके सम्बन्ध में किसी हिन्दी-कवि, संभवतः केशवदास, ने कहा है-

पौढ़न को तृण के पथरे अरु
ओढ़न को पटु द्वै बकली के।
भोजन याम मिलै कबहूँ
कबहूँक भखैं फल द्वै कदली के।
सम्पति को परिवेश इहैऽरु
महादुख देह विदेहलली के।
ता दिल लंक दई जु विभीषन
हाथ बदौं रघुनाथ बली के।।

स्वात्माभिमानी वह है जो देश, समाज, कुल और धर्म की मान-मर्यादा की रक्षा के लिए मर मिटने को तैयार रहता है। इनके सम्मान पर न तो वह स्वयं आघात करता है और न किसी दूसरे का आघात सहन करता है। इनके गौरव में वह अपना गौरव मानता है।

इस प्रकार जो व्यक्ति स्वतंत्र और स्वावलम्बी होकर अपने आत्म-सम्मान की रक्षा में तत्पर रहता है, उसको लोक सम्मान भी मिलता है, जैसा कि ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट हो गया होगा। इसके विपरीत, आत्मगौरवहीन व्यक्ति की वही दशा होती है जो नादिरशाह के आग दिल्ली की बेगमों की हुई थी। विजयी नादिरशाह ने दिल्ली दरबार में आकर मुगल बेगमों को सामने लाने का आदेश दिया। थोड़ी ही देर में बेगमों का जत्था उसके आगे आकर खड़ा हो गया। नादिरशाह ने उनकी ओर आँख उठा कर देखा; इसके बाद वह अपनी तलवार को दूर रखकर स्वयं सिर झुकाकर बैठ गया। बेगमें चुपचाप खड़ी राज्य-विजेता का मुँह ताकती रहीं। थोड़ी देर में नादिर शाह ने गर्व से सिर उठाया और कड़क कर कहा- निर्लज्ज स्त्रियों, भागो यहाँ से; तुममें से एक में भी मुगलों का जातीय अभिमान नहीं है; तुम्हें तो इज्जत से भी जान प्यारी है। तुम्हारी जैसी बाजारू औरतें दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के योग्य बहादुर बेटे पैदा नहीं कर सकतीं। बेगमों का मान मिट्टी में मिल गया।

स्वाभिमान-रहित प्राणी लोक में इसी प्रकार तिरस्कृत होता है। स्वात्माभिमानी का आदर उसके शत्रु भी करते हैं।

(ख) संयमी :- संयमी धन्य हैं क्योंकि वह सर्वसाधारण की अपेक्षा अधिक स्वाधीन, शक्तिशाली और सच्चरित्र होता है। संयमी वह है जो कामदेव के वशीभूत नहीं होता। यह बड़ा कठिन कार्य है। साधारण लोगा तो 'हे विधि, मिलै कवन विधि बाला' का जाप करते हुए स्त्रियों के पीछे धन, प्रतिष्ठा और जीवन तक नष्ट कर देते हैं। उनके संसार में बाला का ही बोलबाला रहता है। बहुसंख्यक लोगों का यह हाल है कि पत्नी के घर में आते ही वे दयिताधीन होकर माता-पिता भाई-बहन को अपनी काममूर्ति के पैरों की धूलि के बराबर भी नहीं मानते। वास्तव में, नारी पुरुष की स्पर्शमणि (कसौटी) है। बहुत कम लोग उस पर खरे उतरते हैं। कामी और स्त्रीजित् तो खोटे ही प्रमाणित होते हैं। जो खरे उतरते हैं, वे ही सच्चे संयमी माने जाते हैं। राम ऐसे ही पुरुष थे। लंका में सीता ने स्वयं हनुमान से कहा था कि लक्ष्मण मुझे से बढ़कर राम के प्यारे हैं। लक्ष्मण राम से भी बढ़कर संयमी थे। उन्हें कर्त्तव्य के आगे चौदह वर्ष तक अपनी स्त्री का ध्यान भी नहीं आया। ऐसे संयमी की वन्दना कौन नहीं करेगा!

संयमी वह है जो लोभ को जीत लेता है। लोभ को जीतना सहज नहीं है। एक विलायती पंडित ने कहा है कि सोने की परीक्षा कसौटी से होती है और मनुष्य की परीक्षा सोने से- 'Gold is tested by hard stones; men are tested by gold.'-*Chilo.* साधारण व्यक्ति पैसे का प्रलोभन नहीं त्याग सकता; वह तो सोने-चाँदी के टुकड़ों पर अपना व्यक्तित्व बेंच देता है। अर्थ लोलुपता जन-साधारण की बड़ी भारी दुर्बलता है। उससे मुक्त रहने वाला अवश्य ही धन्य कहा जायगा।

संयमी वह है जो अहंकार के वश में नहीं होता। साधारण मनुष्य थोड़ा-बहुत मान-दान पाकर प्रायः बहक जाते हैं। एक भोजपुरी कहावत है- 'पिपीडीकाँ पाँखि जनमये अनल झपान।' अर्थात्- चींटी के जब पंख निकलते हैं, तो वह आग में कूदने दौड़ती है। असंयमी पुरुषों की यही दशा होती है। वे विवेक-भ्रष्ट होकर गौरव-भ्रष्ट हो जाते हैं। एक पाश्चात्य विचारक ने सत्य ही कहा है कि सफलता पाकर बहुत-से भले आदमी भी बुरे बन जाते हैं। संयमी पुरुष ही ऊँचे स्थान पर पहुँचकर अपने को फिसलने से बचा सकता है। इसलिए वह प्रशंसनीय होता है।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला (26)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

अतस्मिन तद् बुद्धि है। अस्तु आचार्य शंकर के अनुसार मूर्ति में देवत्व की भावना करना अविद्या है। ऋषि दयानन्द ने कहा कि भाव में भाव समझना भावना है और अभाव में भाव की कल्पना करना दुर्भाव है अगर भाव की तीव्रता या सच्चाई वस्तु की स्थिति को बदल सकती है तो ऋषि कहते हैं- 'तुम मृतिका में सुवर्ण रजतादि, पाषाण में हीरा पन्नादि समुद्रफेन में मोती, जल में दुग्ध दही घृतादि, धूल में मैदा शक्कर आदि की भावना कर के उनको वैसा क्यों नहीं बनाते हो? तुम लोग दुःख की भावना कभी नहीं करते वह क्यों होता है और सुख की भावना सदैव करते हो, यह क्यों नहीं प्राप्त होता? अन्धा पुरुष नेत्र की भावना करके क्यों नहीं देखता। मरने की भावना नहीं करते फिर क्यों मर जाते हो? इसलिए तुम्हारी भावना सच्ची नहीं क्योंकि जैसे में वैसी करने का नाम भावना है।'

भावना का मिथ्यार्थ करके बुद्धिवादी जड़ को पुष्ट करने का प्रयत्न करता है। भावना को इस सीमा तक उतार लिया गया है कि 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी' एक स्वयंसिद्धि बन गई है। साकारवादियों की परमात्मा विषयक विभिन्न कल्पनाओं ने आध्यात्मिक अनुभव की प्रामाणिकता को ही हास्यास्पद कर दिया है। जब परमात्मा एक है और वह 'तत्व' है तो उसकी अनुभूति और व्यक्ति एक सी ही होनी चाहिए जैसे भौतिकी एक सुनिश्चित विज्ञान है इसमें प्रयोग चाहे जिस देश की प्रयोगशाला में किये जांय एक से ही परिणाम उपलब्ध होंगे। ऐसा नहीं हो सकता कि ग्रेविटी का जो नियम वाशिंगटन की प्रयोगशाला में अनुभव किया जाय वह मास्को में न हो। प्रकाश का 'रमन इफेक्ट' सिद्धान्त जैसा भारत की प्रयोगशाला में सिद्ध किया गया था वैसा ही संसार की प्रयोगशालाओं में सिद्ध किया गया। सबके परिणाम एक से ही मिले। हम एक और उदाहरण लें- बीजगणित का $(a+b)^2$ अर्थात् (अ+ब)^२ समीकरण संसार के किसी भी भाग में हल किया जाय और हल करने वाला किसी भी वर्ग राष्ट्रीयता का क्यों न हो उत्तर a^2+b^2+2ab ही आवेगा। इसमें भिन्नता नहीं होगी। क्योंकि बीजगणित एक सुनिश्चित विज्ञान है जिसमें अपने नियम हैं और उत्तर भी प्रामाणिकता को आंकने की कसौटी है। इस दृष्टि से लार्ड बर्टेन्ड रसन ने कहा कि ईश्वरवाद कोई सुनिश्चित विज्ञान नहीं है। हम वैज्ञानिक सत्य के समान इस पर न तो विश्वास कर सकते और न इसका कोई उपयोग उठा सकते हैं। वस्तुतः परमात्मा की विभिन्न प्रकार की आकृतियों की कल्पना ने इस प्रकार के सन्देह को जन्म दिया और अनीश्वरवाद को फैलाया। रसल पूछते हैं कि इन विभिन्न प्रकार के ईश्वरों की उपयोगिता क्या है? कदाचित् वह उस तरफ नहीं सोच सके। हजारों-लाखों लोगों की आजीविका चलती है। शिल्पकार, मूर्तिकार, धूपबत्ती उद्योग, नाचने गाने वाले, शृंगार करने वाले, फूल वाले, न जाने कितने लोगों का उदर-पोषण इसमें हो रहा है। बड़े-बड़े मेले जुड़ते हैं। तिजारत यात्रा होती है। पैसा खर्च होता है। धन फैलता है (Circulate होता है) इतने लाभ तो हैं ही इसके अतिरिक्त और भी बहुत से लाभ हो सकते हैं। रसल का कहना है कि ईश्वरवाद से चरित्र निर्माण का कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं निवेदन करूँगा कि श्रीमान् रसल महोदय की धारणा का सीधा सम्बन्ध चरित्र से है। हाँ यह ठीक है कि जड़ या प्रतीक पूजा का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है बल्कि यह भी कहा जा सकता है कि जड़ पूजा ने अन्धविश्वास और भाग्यवाद को फैलाकर चारित्रिक पतन ही किया। मैंने कई बार यह जानने का प्रयत्न किया कि आखिर मूर्ति पूजा का मानव समाज में प्रचलन कैसे हुआ? जहाँ तक उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का प्रश्न है बौद्ध धर्म से पहले भारत में मूर्ति पूजा नहीं थी। पूजा के लिए सबसे पहले बुद्ध की मूर्तियाँ ही बनीं थीं। अरब के लोग सर्वप्रथम भारत में बुद्ध की मूर्ति के सम्पर्क में आये। बुद्ध शब्द का अपभ्रंश वहाँ बुत् मूर्ति के अर्थ में रूढ़ हो गया। अरब का बुत् शब्द ऐतिहासिक प्रमाण है इस बात का कि भारत में सर्वप्रथम बुद्ध की मूर्तियाँ बनीं। स्वामी दयानन्द से किसी ने पूछा कि मूर्ति पूजा कहाँ से चली। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में इसका उत्तर दिया 'जैनियों से' जैनियों ने कहाँ से ली है जब स्वामी जी से पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया 'अपनी मूर्खता से'-(सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास) मेरा ऐसा अनुमान है कि इसके अलावा मूर्तिपूजा का एक और कारण है जो नितान्त भावुकता जन्य है जैसे परमात्मा को सर्व व्यापक मानने से भावुक इसलिए डरे कि उसे गन्दगी में कभी व्यापक मानना पड़ेगा। ऐसा मानने से परमात्मा की सर्वशक्तिमत्ता और गरिमा को आघात पहुँचेगा। लिहाजा परमात्मा एक देशी है। चूँकि एक देशी है अस्तु उसका आकार होना आवश्यक है अतः भक्तों ने सौन्दर्य की उत्कृष्टतम कल्पना करके परमात्मा को आकार प्रदान किया। भगवान को भी मानव रूप प्रदान किया गया। पूजक जिस वर्ग और जाति के थे उन्होंने अपनी ही जाति और वर्ग के रूप में कल्पना की। अगर आप किसी नीग्रो से यह पूछें कि उसका भगवान कैसा है तो वहे उत्तर देगा काला, मोटे होंठ वाला, घुँघराले बाल वाला, चपटी नाक वाला बिलकुल काला है। बिलकुल वैसा ही है जैसे हम हैं? अफ्रीका के पहाड़ों पर या नदियों में रहता है, हमारी बोली बोलता है अथवा हमारे आकाश में चमकने वाले नक्षत्रों में वास करता है। आप जब यह प्रश्न किसी यूनानी से पूछेंगे, उसका उत्तर होगा हमारा परमात्मा गोरा, चौड़े ललाट, लम्बी नाक वाला है। यूनान के पर्वतों पर रहता है या यूनान में आकाश के ऊपर चमकने वाले नक्षत्रों में वास करता है। भारतीयों से इस प्रश्न का उत्तर पूछा जाय तो वे उत्तर देंगे जैसे हम विभिन्न रूप-रंग वाले हैं वैसे ही हमारा परमात्मा है। कोई कर्पूर गौर वर्ण का है कोई श्यामल। कोई लाल, कोई काला। यह सब परमात्मा हमारे देश के पहाड़ों पर, नदियों के संगम पर या समुद्र पर वास करते हैं, हमारे जैसे कपड़े पहनते हैं, हमारे जैसी भाषा बोलते हैं, हमारे रीति-रिवाजों को मानते हैं। इस प्रकार आप देखेंगे कि परमात्मा की जो कल्पना की गई वह मानव चिन्तन की एक विवशता है। मनुष्य किसी मौलिक आकार की कल्पना नहीं कर सकता। उसकी कल्पना किसी न किसी अंश में उन आकारों से प्रभावित

होगी जो ब्रह्माण्ड में उपस्थित है। मुझे एक घटना याद आई- मैं एक कस्बे में था। दशहरे के दिन थे। सत्संग चल रहा था। उपस्थिति बहुत अच्छी होती थी। उस कस्बे की एक विशेषता थी कि उसमें ६०-७० पी-एच.डी. थे, पचासों एम.ए. थे और सब अच्छे-अच्छे पदों पर नियुक्त थे। दशहरे की छुट्टियों में सब लोग घर आये थे। उच्च शिक्षित श्रोताओं को देखकर मन बड़ा प्रसन्न था। एक दिन ईश्वर विषयक प्रकरण चला। उस संदर्भ में कहीं यह बात आई कि मनुष्य कोई मौलिक रचना नहीं कर सकता अर्थात् मनुष्य न तो कोई ऐसी बात सोच सकता है, न कोई ऐसा चित्र बना सकता है जिसमें प्रत्यय विश्व ब्रह्माण्ड उपस्थित न हो। प्रवचन के बाद एक नवयुवक ने खड़े होकर आपत्ति की। वह उत्तेजित हो गया था। उसने कहा- 'मानव सृजन मौलिक होता है और चिन्तन के लिए किसी भी नाम रूपात्मक प्रत्यय की आवश्यकता नहीं। आप जो भी कुछ कह रहे हैं वह अवैज्ञानिक है और बुद्धिहीन है।' मैंने आहिस्ता से नोट बुक अपने थैले से निकाली और उन्हें थमा दी। मैंने कहा 'आप कोई मौलिक आकृति बना दीजिए मैं अपने शब्द वापस ले लूँगा।' उसने नोटबुक ले ली और कुछ ही क्षणों में एक आकृति बना कर मुझे दिखाई, कहने लगा देखिए यह मौलिक रचना है। मैंने आकृति को कुछ ध्यान से देखा और हँस पड़ा 'यह मौलिक रचना है?' मैंने प्रश्न किया। 'हाँ अगर मौलिक नहीं है तो बताइये इसका नाम क्या है?' उसने कहा। 'बेवकूफी इसका नाम है।' मैंने तुर्की ब तुर्की जवाब दिया। मेरे जवाब से वह युवक जो एकोनॉमिक्स का लेक्चरर था कुछ और गरम हो गया। 'आप कैसे बोलते हैं?' उसने झल्लाकर कहा। 'जैसा आपने बनाया है वैसा ही बोल रहा हूँ।' मैंने धीरे से उत्तर दिया। मित्रो उस मौलिक चिन्तक ने जो आकृति बनाई वह इस प्रकार थी मुख मोर का था जो जिराफ की गर्दन में फिट किया गया था। दुम की तरफ बारहसिंघे से सींग लगा दिये थे। मैंने उस लेक्चरर से कहा भले आदमी क्या यही मौलिक चिन्तन होता है। प्रकृति की व्यवस्था और संतुलन को तुमने जिस ढंग से बिगाड़ा है उसे मौलिक मूर्खता कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। अगर आपको शरीर विज्ञान का थोड़ा भी बोध होता तो आप ऐसा कभी नहीं करते। गैंडे के धड़ के पोषण के लिए क्या मोर की चोंच पर्याप्त है। पीछे के हिस्से में सींग लगाकर तो अपने अद्भुत चमत्कार किया है। (देर तक तीव्र हास्य के कारण वक्ता को कुछ क्षण रुक जाना पड़ा) कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य की यह विशेषता है कि वह कोई ऐसी आकृति कल्पित नहीं कर सकता जिसके प्रत्यय ब्रह्माण्ड में उपस्थित न हो। परमात्मा जो अभौतिक है नाम रूप से मुक्त है। जब उसके आकार की कल्पना की गई तो यह विशेषता सामने आई। विवश होकर अथवा विकलता से उसने परमात्मा को साकार रूप प्रदान किया।

(क्रमशः)

www.thearyasamaj.org

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज की भव्य और विशाल शोभायात्रा

जड़पूजा के स्थान पर चेतन की पूजा की दिग्दिगन्त में घोषणा करती हुई 'शिवरात्रि-ऋषिबोध पर्व' पर नगर आर्य समाज, रकाबगंज एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में भव्य शोभायात्रा इस वर्ष चर्चा का विषय बन गई। २ बजे अपराह्न श्रीमद्दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर से प्रारंभ होकर यह शोभायात्रा डी.ए.वी.कालेज, नाका हिंडोला, गणेशगंज, अमीनाबाद मार्केट, झंडावाला पार्क होती हुई नगर आर्य समाज मंदिर के सामने पहुँची। तत्पश्चात् नगर आर्य समाज, रकाबगंज के त्रिदिवसीय वार्षिक समारोह में विलीन हो गई।

शोभायात्रा का नेतृत्व जिला आर्य सभा के पदाधिकारी गण तथा जनपद की विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने किया, जो शोभायात्रा के आगे आगे बैंड बाजे के साथ चल रहे थे। पीछे पीछे आर्य संस्थाओं की ओम् ध्वज तथा नाम पट्ट के साथ सुसज्जित गाड़ियाँ- कारें, ट्रकें, आटो, मोटर साइकिल, स्कूटर इत्यादि वाहन चल रहे थे- जो सम्पूर्ण वायुमण्डल के महर्षि दयानन्द अमर रहे, आर्य समाज अमर रहे के नारों से गुँजा रहे थे। शोभायात्रा में श्रीमद्दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर; श्रीमद्दयानन्द बालिका निकेतन, मोतीनग; आर्य समाज वेदमंदिर, राजाजीपुरम; आर्य लोक वार्ता प्रकाशन; आर्य समाज-शृंगारनगर, तेलीबाग, इन्दिरा नगर, सदर, आदर्शनगर, चन्द्रनगर, मानसरोवर एल.डी.ए., डालीगंज, लाजपत नगर चौक के सुसज्जित वाहनों के साथ बाराबंकी आवास विकास कालोनी की भजन मण्डली ओजस्वी भजन गाती हुई चल रही थीं।

आर्य समाज राजाजीपुरम एवं आर्य समाज चन्द्रनगर द्वारा प्रसाद वितरित किया जाता रहा। श्री विमल किशोर, प्रेममुनि जी एवं आर्य वीरांगना दल की कु. वैशाली आर्य द्वारा जयघोष लगाये गये। जिला आर्य सभा के बैनर के साथ प्रधान श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी (अमृतमुनि), प्रबोध सागर जौहरी(मंत्री), नवनीत निगम, प्रेममुनि जी वानप्रस्थी, प्रत्यूषरत्न पाण्डे, डॉ.भानुप्रकाश आर्य, सेवकराम आर्य, निरंजन सिंह, रमेशचन्द्र आर्य, बिल्लेश्वर शास्त्री, रमाकान्त सिंह, पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार, अखिलेश लखनवी, मनीष आर्य, काशी प्रसाद शास्त्री, आलोक चौधरी, डोरीलाल आर्य, कृष्णानन्द सिंह, अतुल सिंह, सतीश चन्द्र बिसारिया, ज्ञानेन्द्रदत्त त्रिपाठी, विनोद कुमार खरवृन्दा, अम्बरीश कुमार अग्रवाल, आत्मप्रकाश बत्रा, मनमोहन तिवारी, वंशीलाल आर्य, प्रेमशंकर आर्य, रवि विरमानी, दिनेश बाधवा इत्यादि आर्यजनों की उपस्थिति ने शोभायात्रा का गौरव बढ़ाया।

शोभायात्रा का जगह जगह पर नगरवासियों ने भव्य स्वागत किया। यह वर्ष में पहला अवसर था, जब किसी धार्मिक जुलूस पर स्थान-स्थान पर फूलों की वर्षा हुई, चाय, जलपान, मिष्ठान्न, फल वितरण द्वारा स्वागत किया गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो लखनऊ की जनता सच्चे शिव का दीदार करने को उत्सुक प्रतीत हो रही है तथा नकली शिव की पूजा से ऊब चुकी है। प्रशासन द्वारा पुलिस की व्यवस्था चुस्त, दुरुस्त, अत्यंत उत्तम और प्रशंसनीय थी। इसमें संदेह नहीं कि शोभा यात्रा की शोभा बढ़ाने में पुलिस कर्मियों का योगदान भी स्तुत्य रहा। *(आनन्द चौधरी)*

सारस्वत सम्मान एवं काव्यगोष्ठी

१०.०२.२०१७, राम स्वरूप-जगदेई स्मृति सेवा संस्थान द्वारा प्रबन्धन एवं प्रख्यात कवि कुबेर सिंह यादव के सौजन्य से आयोजित समारोह में साहित्यिक क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु डा.तुकाराम वर्मा, अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक', डा.विद्यासागर मिश्र 'सागर', गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', राजा भइया गुप्ता 'राजाभ', श्रीमती अनिता सिंह तथा मुकेश कुमार सिंह चौहान का सारस्वत सम्मान किया गया। गोष्ठी में रमाशंकर सिंह, श्रीमती अनिता सिंह, उमाकान्त पांडे, डा.तुकाराम वर्मा, कुबेर सिंह, नरेन्द्र भूषण, प्रमोद द्विवेदी, विद्यासागर मिश्र, मुकेशानन्द ने काव्य पाठ किया। संचालन श्री हरिमोहन वाजपेयी 'माधव' ने किया।

ओजोमित्र शास्त्री को श्रद्धांजलि

०५.०२.१७, कमता। प्रशान्त पब्लिक स्कूल के निकट, सी-१०२८, कल्याण विहार, कमता में दिवंगत आचार्य ओजोमित्र शास्त्री विद्यावारिधि I का प्रथम स्मृति दिवस समारोह मनाया गया। शास्त्री जी के पुत्रों- श्री विश्वमित्र, सर्वमित्र एवं अखिल मित्र ने कुशलतापूर्वक इस आयोजन सम्पन्न कराया। आयोजन को सफल बनाने में श्री सत्यप्रकाश आर्य (बाराबंकी) ने कोई कसर नहीं छोड़ी। सत्यप्रकाश जी स्व.शास्त्री जी को 'पिताजी' कहा करते थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में आचार्य संतोष कुमार वेदालंकार के आचार्यत्व एवं डॉ. वेद प्रकाश आर्य के सान्निध्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में यजमान श्री विश्वमित्र श्रीमती शीलामित्र तथा श्रद्धेया उर्मिला शास्त्री जी के साथ ही समस्त परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। यज्ञोपरान्त आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार ने ओजोमित्र के प्रकाण्ड पाण्डित्य पर प्रकाश डाला। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने शास्त्री जी के 'आर्य लोक वार्ता' के साथ स्नेह सम्बन्धों की चर्चा की। आचार्य विश्वव्रत ने शास्त्रीजी के औदार्य और संस्कृत प्रेम पर प्रकाश डाला। सत्यप्रकाश जी की वाणी भावविभोर होने के कारण अवरुद्ध हो गई-'रही सही सोऊ कहि दीनी हिचकीनि सों' की उक्ति को चरितार्थ किया। आर्य संन्यासी स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती जी, जिनका लम्बे समय तक स्व.शास्त्री जी का साथ रहा है, ने कमता में शास्त्री जी के स्मारक के रूप में आर्य समाज की स्थापना पर बल दिया। समारोह में नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी तादात में लोगों ने आकर भाग लिया तथा शास्त्री जी को श्रद्धासुमन अर्पित किये। श्री विश्वमित्र जी ने इस अवसर पर विद्वानों को सम्मानित किया तथा प्रीतिभोज की व्यवस्था की।

आर्य समाज के शलाका पुरुष पं.मदन मोहन जोशी का निधन

आर्य समाज आदर्शनगर द्वारा त्रिदिवसीय शोक की घोषणा

आर्य समाज के शलाका-पुरुष पं.मदन मोहन जोशी (पूर्व प्रधान, आर्य समाज आदर्शनगर, आलमबाग, लखनऊ) का १७.०३.१७ को प्रातःकाल ४ बजे ब्राह्म मुहूर्त में देहावसान हो गया। आप लगभग एक वर्ष से नोएडा में अपनी सुपुत्री श्रीमती सुमन कुमारिया के साथ रह रहे थे। जोशी जी अपने पीछे पत्नी चित्रा जोशी, पुत्र आशीष जोशी (अमेरिका में सेवारत), पौत्र-ओम्, राम एवं पुत्री सुमन का भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

जोशी जी आर्य समाज आदर्शनगर के संस्थापक-उन्नायक, आर्य समाज विचारधारा के कट्टर समर्थक अनुपालक, विचारक, गायक, लेखक एवं प्रचारक थे। आर्य समाज के लिए त्याग की भावना उनमें कूट कूट कर भरी थी। संस्कारों तथा यज्ञ इत्यादि की दक्षिणा से आर्य समाज के कोष की अभिवृद्धि करते थे। समय और नियम पालन में बेजोड़- जोशी जी का जीवन प्रेरणादायक एवं अविस्मरणीय है। 'आर्य लोक वार्ता' के स्वाध्याय आन्दोलन को गति देने में जोशी जी अग्रगण्य थे। श्री सतीश निझावन, मंत्री, आर्य समाज आदर्शनगर ने गुड़गाँव से जोशी जी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है। *(आत्मप्रकाश बत्रा, प्रधान, आ.स.आदर्शनगर)*

माता विजय चन्द्रा को श्रद्धांजलि

२४, वैष्णव विहार, सेक्टर-११, इन्दिरा नगर में श्री सौरभचन्द्र एडवोकेट की माता श्रीमती विजय चन्द्रा की पुण्य स्मृति में शान्तियज्ञ का आयोजन १५.०२.१७ को किया गया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न इस यज्ञ में बड़ी संख्या में सौरभ जी के पारिवारिक जनों, इष्टमित्रों, संबन्धियों ने भाग लिया तथा स्वर्गीया माता जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। यज्ञ में माता जी के ज्येष्ठ पुत्र शरद्चन्द्र तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती आरती चन्द्रा ने यजमान का आसन ग्रहण किया साथ ही श्री सौरभ चन्द्र, श्रीमती रूपम चन्द्र, श्रीमती रोली, गुंजन, डा.रूपाली श्रीवास्तव, डॉ.एस.के.श्रीवास्तव इत्यादि ने यज्ञ में आहुतियाँ देकर अपनी सद्भावना का परिचय दिया।

बताते चलें कि माता श्री विजय जी एक अत्यन्त व्यवहार कुशल एवं धर्म परायण, आर्य विचारों की महिला थीं। मुम्बई में वे चिकित्या हेतु अपने ज्येष्ठ पुत्र के यहाँ गई थीं, जहाँ दि. ०६.०२.१७ को ८३ वर्ष की आयु में उनका आकस्मिक निधन हो गया। आर्य लोक वार्ता की हार्दिक श्रद्धांजलि!

स्व. चित्रा जौहरी : एक आदर्श समाजसेविका

मजबूत से मजबूत प्रेम के बंधनों में बँधी हुई नर-नारी के युग्म को भी एक न एक दिन बिछुड़ना पड़ता है- यही विधि का विधान युग-युग से चला आ रहा है। श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी की सहधर्मिणी प्रेमस्वरूपा श्रीमती चित्रा जौहरी का आकस्मिक निधन ०७.१२.०१६ को हो गया था और वे अपने वयोवद्ध पति श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी को एकाकी छोड़कर नश्वर संसार को अलविदा कह दिया।

स्व.चित्रा जौहरी अपने पति के साथ

श्रीमती चित्रा जौहरी (सेवानिवृत्त प्रवक्ता, जनता गर्ल्स कालेज, आलमबाग, लखनऊ) बरेली के प्रख्यात स्वतंत्रता-सेनानी स्व.श्री नारायण सहाय जौहरी की सुपुत्री थीं। वर्ष १९८७ में आप आर्य समाज आदर्शनगर की सदस्या बनीं तथा अंतिम सांस तक समाजसेवा में अग्रणी रहीं। आर्य लोक वार्ता का श्रद्धापूर्वक नमन!

आध्यात्मिक भजनगायिका आदर्श गुप्ता दिवंगत

यह समाचार देते हुए हमें हार्दिक शोक का अनुभव हो रहा है कि वैदिक सत्संग अलीगंज, लखनऊ की सक्रिय सदस्या, आध्यात्मिक भजनों की सुमधुर गायिका श्रीमती आदर्श गुप्ता अब नहीं रहीं। आपका १६.०२.१७ को हृदयगति रुकने से आकस्मिक निधन हो गया। दि. १८.०२.१७ को आयोजित शान्तियज्ञ में आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। *(पाल प्रवीण)*

जितेन्द्र गुलाटी का आकस्मिक निधन

अनभ्र वज्रपात की भाँति आर्य समाज आदर्शनगर के सक्रिय सदस्य श्री जितेन्द्र गुलाटी (४६) का आकस्मिक निधन होने से आदर्शनगर क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। आर्य समाज विधि से उनकी अन्त्येष्टि एवं शान्तियज्ञ की व्यवस्था की गई। वे अपने पीछे छोटे-छोटे बच्चों का दुःखी परिवार छोड़ गये हैं। परमात्मा परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति तथा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

श्रीमती स्वदेशबाला सलूजा दिवंगत

आर्य समाज आदर्शनगर की सक्रिय सदस्या श्रीमती स्वदेशबाला सलूजा (धर्मपत्नी श्री सतीशचन्द्र सलूजा) का निधन दि. ०६.०२.१७ को राममनोहर लोहिया अस्पताल, लखनऊ में हो गया। आपकी अन्त्येष्टि बैकुण्ठधाम आलमबाग में १०.०२.१७ को हुई और शान्तिपाठ ११.०२.१७ को आदर्शनगर आर्यसमाज के प्रांगण में हुआ जिसमें अनेक रिश्तेदारों और व्यक्तियों ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रीमती स्वदेशबाला का जन्म आर्य परिवार माता श्रीमती वेदवती कश्यप और पिता श्री सर्वप्रकाश कश्यप (शृंगारनगर) में हुआ और आपके माता पिता ने शृंगारनगर आर्य समाज मन्दिर को बनाने में योगदान दिया था। *(आत्मप्रकाश बत्रा)*

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
9198080000

नवोन्मेष
कृष्णा जी, पिंटेक

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्न बैंकों की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

(1) बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

(2) बैंक-इलाहाबाद बैंक, ए-869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLAO211122
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 5022 3541 717
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ

परामर्श एवं सहयोग
श्रीमती प्रियंका शर्मा, लखनऊ
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
श्रीमती रमा आर्य 'रमा' लखनऊ
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

www.thearyasamaj.org

राजस्थान-समाचार

शिक्षा से जीवन में उजियारा फैलता है

कोटा, २३ फरवरी। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि शिक्षा से जीवन में उजियारा फैलता है। ये ही उजियारा इसे सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

श्री चड्ढा सकतपुरा राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मे आयोजित वार्षिकोत्सव एवं आर्य समाज द्वारा स्कूल बैग वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। श्री चड्ढा ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हमेशा नारी समाज के उत्थान के लिए कार्य किए हैं। एक नारी शिक्षित होती है तो उसकी सात पीढ़ियां तर जाती हैं। उन्होंने बालिकाओं से अपने गुरुजनों व वरिष्ठजनों से मार्गदर्शन लेकर शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने का आग्रह किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि थे पार्षद विकास तंवर। कार्यक्रम में आर्य समाज तलवण्डी के प्रधान आर.सी.आर्य, जे.एस. दुबे, स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती नीलम गुरुलानी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रेखा शर्मा ने किया तथा आभार कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती मधु अग्रवाल ने जताया। *(अरविन्द पाण्डेय)*

तेलंगाना-समाचार

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन

हैदराबाद का राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किसी प्रकार के बदलाव की घोर निन्दा करता है और इस प्रकार के कुकृत्य को अविलम्ब बन्द करने की मांग करता है। सम्मेलन में सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण को ही मान्यता प्रदान करते हुए अन्य संस्करणों को अवैध घोषित किया गया। यह भी निश्चय किया गया कि सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार के लिए पूरे देश में विशेष अभियान चलाया जाए। सम्मेलन के संयोजक आचार्य सोमदेव शास्त्री जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया। *('आर्य जीवन' हैदराबाद से)*

हमीरपुर-समाचार

हमीरपुर के गौरव का सूर्यास्त

२३ जनवरी २०१७ को हमीरपुर के गौरव आचार्य लक्ष्मीशंकर द्विवेदी शास्त्री का ८० वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अपने पीछे पत्नी शीला द्विवेदी, चार बच्चे साधना, आशुतोष, अमिताभ और आयुष तथा उनके परिवार को छोड़ गये हैं। शास्त्री जी एक आदर्श आचार्य, कुशल याज्ञिक और श्रेष्ठ धर्मप्रचारक थे। आपका जन्म सन् १९३७ में कानपुर जनपद स्थित ग्राम गोपालपुर में स्व.नर्मदा प्रसाद द्विवेदी एवं श्रीमती सियाकुमारी के घर आँगन में हुआ था।

डी.ए.वी.कालेज, कानपुर से संस्कृत में आपने परास्नातक की डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात् आप विद्या मंदिर इंटर कालेज हमीरपुर में तीन दशक तक प्रवक्ता पद पर कार्य करते रहे। आर्यसमाज मंदिर हमीरपुर में आपने दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की तथा सरस्वती शिशु मंदिर हमीरपुर के प्रबंध मंडल का निर्देशन भी करते रहे। लक्ष्मीशंकर शास्त्री के निधन पर एक शोकाकुल व्यक्ति ने कहा था-'Today glory of Hamirpur has desposed forever.' *(डॉ.सत्यकाम आर्य)*

सीतापुर-समाचार

हिन्दी साहित्य परिषद का काव्योत्सव

हिन्दी साहित्य परिषद सीतापुर द्वारा नववर्ष अभिनन्दन के उपलक्ष्य में काव्योत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पाँच साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। जिन्हें सम्मान प्रदान किया गया वे साहित्यकार हैं- १-श्याम किशोर 'बेचैन'- पर्यावरण संचेतना के कवि २-अरविन्द रस्तोगी ३-डॉ.देवेश कुमार सिंह- भाषा अधिकारी ४-नीरज शुक्ल -लोक गीतकार ५-अनिल द्विवेदी - अध्यक्ष, अन्नपूर्णा संस्थान। कार्यक्रम का संचालन श्री अवधेश शुक्ल ने किया तथा श्रीमती विनोदिनी रस्तोगी ने स्वागत किया। *(ऋचा दीक्षित, पत्रकार)*

होशंगाबाद-समाचार

'अबोध' जी का सम्मान

नर्मदापुरम् होशंगाबाद। शिव संकल्प साहित्य परिषद नर्मदापुरम् ने नर्मदा जयन्ती माघ शुक्ल सप्तमी सम्वत् २०७३ दिनांक ०३.०२.१७ को लखनऊ के वरिष्ठ साहित्यकार दयानन्द जड़िया 'अबोध' को उनकी साहित्यिक सेवाओं के परिप्रेक्ष्य में काशीराम सम्मान की सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया।

उपदेशक-महाविद्यालय/विभाग का शुभारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद में पूज्य आचार्य सत्यसिन्धु आर्य (प्रधानाचार्य गुरुकुल) के जन्मोत्सव स्वर्णजयन्ती समारोह के अवसर पर दिनांक १० जून २०१७ से उपदेशक-महाविद्यालय/विभाग का शुभारम्भ किया जा रहा है। प्रवेशार्थी युवक निम्न चलभाष ९४२४४७१२८८, ९९०७०५६७२६ पर सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेश के लिए न्यूनतम दशमी कक्षा उत्तीर्ण, कम से कम १८ वर्ष के स्वस्थ लग्नशील चरित्रवान् युवा अपेक्षित हैं। इस त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम में निम्न उपाधियाँ प्रदान की जायेंगी- (१) सिद्धान्तप्रवेशकः (२) सिद्धान्ताधिकारी (३) सिद्धान्तभास्कर (४) सिद्धान्तवाचस्पति (५) सिद्धान्त मार्तण्ड। प्रत्येक छः-छः मास में लिखित व मौखिक परीक्षा लेकर क्रमशः उपरोक्त उपाधियों में से एक प्रमाणपत्र सहित प्रदान की जावेगी।

लखनऊ-समाचार

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज, इन्दिरा नगर लखनऊ का वार्षिक अधिवेशन दि.०१.०१.१७ को प्रातः यज्ञ के उपरान्त ९ बजे से दिन रविवार को प्रधान श्री डोरीलाल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तथा निम्नलिखित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य निर्वाचित किये गए-

श्रीमती कान्ति कुमार	प्रधाना
श्रीमती सरिता श्रीवास्तव	उपप्रधान
श्री गंगाराम आर्य	उपप्रधान
श्री रामेन्द्र देव वर्मा	मंत्री
श्री सुरेन्द्र कुमार	उप मंत्री
श्री डोरीलाल आर्य	कोषाध्यक्ष
श्री अभय मुनि	पुस्तकाध्यक्ष
श्री राम गुलाम शर्मा	आय-व्यय निरीक्षक
श्री शिव प्रकाश गुप्त	अधिष्ठाता आ.वी.द.

आर्य उपप्रतिनिधि सभा-श्री डोरीलाल आर्य, श्री रामगोविन्द ठाकुर, श्री अक्षय भाई। आर्य प्रतिनिधि सभा-डा.इन्द्रदेव गुप्त, श्रीमती कुसुम वर्मा। अंतरंग सदस्य-श्रीमती शैल कुमार, श्रीमती आनन्द कुमारी, श्रीमती कुसुम सिंह, श्रीमती सुशीला वार्ष्णेय, डा.वेद प्रकाश(इं.), श्री ओम कुमार सक्सेना, श्री नरसिंह पाल, श्री जे.पी.आर्य, श्री योगमुनि, श्री सदानन्द राय, श्री रमेश चन्द्र। *(रामेन्द्र देव, मंत्री)*

परिणय-रजत-जयन्ती

कवि, लेखक, कथाकार श्री श्रीशरत्न पाण्डेय की वैवाहिक रजत जयन्ती उत्सव दि.२०.०२.१७ को बसन्त कुंज (बालागंज, सीतापुर मार्ग) में सम्पन्न हुआ। आर्योपदेशक धर्नुधर श्री नेमप्रकाश आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा अवसरोचित भजन गायन द्वारा वातावरण को मोहक और मधुर बना दिया। श्रीश जी की माताजी कवचित्री रामा आर्य 'रमा', पिता श्री वी.एस.पाण्डेय (अध्यक्ष, सागर संस्कृति एवं सांस्कृतिक संस्थान), पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, प्रत्यूषरत्न पाण्डेय सहित विशिष्ट व्यक्तियों ने आशीर्वाद दिया एवं शुभकामनाएँ अर्पित कीं। आर्य लोक वार्ता की मंगलकामनाएँ!

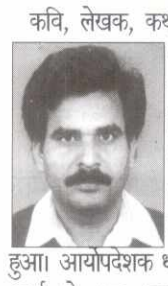

52वां साहित्यकार सम्मेलन

अ.भा.अगीत परिषद लखनऊ तथा डा.रसाल स्मृति एवं शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में दि.०१.०३.१७ को सिटी कान्वेन्ट इन्टर कालेज राजाजी पुरम के सभागार में ५२वें साहित्यकार सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सरस्वती पूजन, दिवंगत साहित्यकारों की स्मृति में रचनाकारों को प्रशस्ति-पत्र व प्रतीक-चिन्ह देकर सम्मान, 'वर्तमान संदर्भ में साहित्यकारों का दायित्व' विषय पर परिचर्चा, पुस्तकों का लोकार्पण, पुस्तक प्रदर्शनी, राष्ट्रीय एकता कवि सम्मेलन तथा गायन-वादन आदि के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम की अध्यक्ष थे डॉ.सूर्य प्रसाद दीक्षित और विशिष्ट अतिथि श्री महेश चन्द्र द्विवेदी उपस्थित थे। *(रंगनाथ मिश्र 'सत्य')*

मवाना की महिमामयी विभूति

स्व. माता शीला पाल

जयति जय माता शीला पाल, जयति जय माता शीला पाल।
अपने शुभ कार्यो से तुमने, किसा समुन्नत भाल।।
संतति को वैदिक संस्कृति में, दिया तुम्हीं ने ढाल,
प्रगति पंथ पर सतत बढ़ रही, कर में लिए मशाल,
आर्य समाज मवाना मंदिर- को कर दिया निहाल,
पाकर तुमको धन्य हुए, प्रियतम सहचर प्रियपाल।
जयति जय माता शीला पाल, जयति जय माता शीला पाल।।

दिनांक १५ जनवरी २०१७ को जिनकी जयन्ती योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ में मनाई गई।

लखनऊ-समाचार

स्मृति दिवस

मानवता की मंगलमय विभूति थे श्री जगदीश खत्री

"मनुष्य में जो भी दिव्य गुण हो सकते हैं, वे सभी स्व.जगदीशलाल खत्री में मौजूद थे। वे मानवता की मंगलमय विभूति थे। जिस तरह युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ में प्रथम सम्मान श्रीकृष्ण को प्रदान किया था; उसी तरह 'आर्य लोक वार्ता' ने सन् २००५ में आयोजित अपने प्रथम सम्मान समारोह में निर्मल, निष्कलंक व्यक्तित्व को धारण करने वाले श्री जगदीश खत्री को सम्मानित किया था।" ये हैं वे उद्गार जो खत्री जी के प्रथम स्मृति दिवस के अवसर पर 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने व्यक्त किये।

५००, हिन्द नगर, लखनऊ में आर्य समाज चन्द्रनगर के पूर्व प्रधान, संरक्षक श्री जगदीशलाल खत्री (भू.पू.पुलिस उपाधीक्षक) का प्रथम स्मृति दिवस ०५.०३.१७ को पारिवारिक जनों द्वारा मनाया गया। प्रातः ९ बजे से यज्ञ वैदिक विद्वान् पुरोहित श्री अखिलेश लखनवी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्य रूप में श्रीमती वेद रतन खत्री (खत्री जी की सहधर्मिणी), हरीश खत्री, सतीश खत्री (पुत्रद्वय), अजय सपरा (दामाद), श्रीमती लता एवं वंदना (पुत्रवधुएँ), ज्योत्सना(पुत्री) के अलावा नई पीढ़ी के ध्रुव, आकाश, देव, ऋषि, अर्जुन, देविका इत्यादि ने यज्ञ के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित किये। यज्ञोपरान्त श्रद्धांजलि सभा में श्रीमती वंदना खत्री ने स्व.खत्री के प्रिय भजन 'यह आर्य समाज का मंदिर है' सुनाया। श्रीमती रेनू भसीन ने अपने गायन से सभी को को भावविभोर कर दिया। श्री रणसिंह प्रधान आर्यसमाज चन्द्रनगर, दिनेश बाधवा और उनकी माताजी, रवि विरमानी, अमिता विरमानी, विद्यासागर बग्गा सहित अनेक आर्य समाजों के प्रतिनिधि गण मौजूद थे। कार्यक्रम का समापन प्रीतिभोज के साथ हुआ। समारोह में खत्री जी की स्मृति में पारिवारिक जनों द्वारा प्रकाशित 'स्मृतिका' का वितरण किया गया। खत्री जी के पारिवारिक चित्रों, संस्मरणों, उनके प्रिय भजनों, आत्मकथ्य तथा संध्या यज्ञ-पद्धति से सजी हुई 'स्मृतिका' की सभी ने सराहना की। *(रणसिंह)*

डॉ.शान्तिदेव बाला को किया याद

महिला शक्तिमण्डल द्वारा वसंतोत्सव

०७.०२.२०१७, विवेकानन्द पुरी- श्रीमती निशान्त कंसल के आवास पर स्मृतिशेष वैदिक विदुषी डॉ.शान्तिदेव बाला द्वारा संस्थापित महिला शक्ति मंडल ने वसन्त पंचमी सरस्वती पूजा पर्व का आयोजन किया। इस अवसर पर वैदिक विधान के अनुसार यज्ञ हवन का कार्यक्रम डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने विगत वर्षों की भांति सम्पन्न कराया। आपने वसंत की महिमा के साथ ही स्मृतिशेष डॉ. शान्दिदेव बाला के दिव्यगुणों और दैवी प्रतिभा पर प्रकाश डाला।

आचार्य जी ने कहा- डॉ. शान्तिदेव बाला अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न लेखिका, कवयित्री, कथाकार, सम्पादक एवं संगठनकर्त्री थीं। शताब्दियों में ही ऐसी प्रतिभाएँ जन्म लेती हैं। आपन आशा प्रकट की कि महिला शक्ति मंडल उनके बताये आदर्शों पर अग्रसर रहेगा।

बड़ी संख्या में महिला मंडल की सदस्याओं ने सरस्वती की पूजा, स्तुति की, श्रद्धासुमन अर्पित किये। प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रमों का संयोजन श्रीमती वीना गौतम ने किया तथा अध्यक्षता महिला शक्ति मंडल की अध्यक्षा श्रीमती गीता गुप्त ने की। अन्त में सभी के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

आर्यसमाज आदर्शनगर का 55वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज का ५५वाँ वार्षिकोत्सव एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती का १९६वाँ जन्मोत्सव ९ से १२ फरवरी २०१७ तक आर्य समाज मंदिर के सभागार में धूमधाम से मनाया गया। आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार के आचार्यत्व में यज्ञ हुआ तथा नित्यप्रति युवा व्याख्याता श्री आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक (होशंगाबाद) के प्रवचन तथा बिजनौर के भजनोपदेशक श्री योगेश दत्त के सुमधुर भजन होते रहे।

दिनांक १२.०२.१७ को समापन दिवस पर ऋषि लंगर की सुचारु व्यवस्था की गई, विद्वनों तथा आर्य समाज की दो महिला सदस्यों, आर्य समाज के सेवक तथा ओषधालय के चिकित्सक डॉ.राजू श्रीवास्तव को सम्मानित किया गया।

श्री आत्मप्रकाश बत्रा ने आर्य समाज की महिला सदस्यों को विशेष धन्यवाद दिया तथा श्री सतीश निझावन (मंत्री, आर्य समाज) के प्रति आभार प्रदर्शित किया, जिन्होंने गुड़गाँव से लखनऊ पधारकर उत्सव के कार्यक्रमों का संचालन किया तथा आर्य जनों में नई जान डाल दी।

www.thearyasamaj.org

काव्यायन

होली पर विशेष

सन् सत्रह होली, उड़ा
रंग अबीर गुलाल।
धरती की क्या बात है,
गगन हो गया लाल।।

केसरिया रंगो में रंगी,
सियासती तसवीर।
बुरा न मानें पेश है
कवियों की तदबीर।।

एक्जिट पोल अवाक् हैं,
ज्योतिष है हैरान।
राम लहर से भी बड़ा
मोदी का तूफान।।

महिमा अमित न कहि सकैं,
सहस शारदा शेष।
राम लहर से भी बड़ी,
मोदी लहर विशेष।।

हर हर गंगे भूलकर
भूल राम-घनश्याम।
तीन लोक है जप रहा
मोदी मोदी नाम।।

माताएँ निज गोद में
शिशु को रहीं सँभार।
बच्चे गोदी भूलकर,
'मोदी' रहे पुकार।।

अडवाणी जी शान्त हैं,
जोशी जी खामोश।
गूँज रहा आकाश में
'मोदी' का जयघोष।।

हर हर गंगे भूलकर
शंकर विष्णु महेश।
'मोदी मोदी' जप रहा
सारा भारत देश।।

मोदी मोदी जप रहा सारा हिन्दुस्तान

बच्चे वृद्ध जवान या
निपट रंक, धनवान।
'मोदी मोदी' कह रहा
अब तो पाकिस्तान।।

तिरुपति बालाजी, गया
साईं चारों धाम।
भूल भक्तगण जप रहे
'मोदी मोदी' नाम।।

जितना सिर खल्वाट है
उतनी बुद्धि विराट।
अमित शाह की चाल की
बनी न कोई काट।।

उठा पटक परिक्षेत्र में
नहीं कभी शैथिल्य,
अमर सिंह ही हिन्द के
हैं अभिनव कौटिल्य।।

एक जेल ही जहाँ पर
कट जाते हैं पाप।
गायत्री जी कर रहे
गायत्री का जाप।।

सीट मात्र अखिलेश संग
हैंडिल राहुल हाथ।
यूपी को अतिशय अधिक
यह पसंद है साथ।

बजी न कोई दुंदुभी,
मचा न कोई शोर।
कांग्रेस की खटिया खड़ी
शान्त प्रशान्त किशोर।।

सोच रहे राहुल खड़े
घर का रहा न घाट।
अरे! प्रशान्त किशोर ने
खड़ी कर दई खाट।।

मतदाता फिर से खड़ा
वोट लिए तैयार।
राहुल-बबुआ शो करो
सड़कें रहीं पुकार।।

छात्राओं को दे दिए
मुक्त हस्त लैपटाप।
अपराधों के ग्राफ में
उधर कर दिया टाप।।

किया इलेक्शन टाप हित
राहुल से अनुबंध।
चचा पिता अमरेन्द्र से
तोड़ लिए सम्बन्ध।।

स्वाद न जाने नकल का
अधम मूर्ख स्वच्छंद।
बंदर-अदरख की तरह
यह वोटर मतिमंद।।

नोट बंद, फिर भी जमा
एक सौ पांच करोड़।
दुष्ट दामोदर ने दई
मेरी हाँडी फोड़।।

ई.वी.एम. का दोष सब
शीघ्र कराओ जाँच।
आँगन टेढ़ा है जिसे
वह क्या जानै नाच।।

जन धन खाते से खुले
बंद हृदय के द्वार।
फिर गरीब की किचेन हित
खुले गैस भण्डार।।

त्रय तलाक पर रोक की
आहट कर अनुमान।
निश्चय महिला वर्ग का
सके न मुल्ला जान।।

पुनः गरीबों ने सुना
हो गई बंदी नोट।
मोदी-झोली में भरे
सबने खुलकर वोट।।

औरों ने अबतक किया
तन का ही उपचार।
लेकिन मोदी ने किया
मन पर भी अधिकार।।

खोज थके अखिलेश संग
राहुल विगत विनोद।
मोदी तो खेलत मिले
गंगा माँ की गोद।।

कुनबे में भगदड़ मची
हुई तिजारत मंद।
नोट बंद से सभी की
हुई बोलती बंद।।

अमेरिका में ट्रम्प हैं
दुनिया में हड़कम्प।
उससे भी ऊँची मगर
मोदी जी की जम्प।।

कटक अटक कश्मीर से
कच्छ कोच्चि गुजरात।
केरल से हिमवान तक
मोदी की ही बात।।

भूमि सप्त सागर सहित
हिमगिरि मलय महेन्द्र।
कौशलेन्द्र दामोदर
'मोदी' एक नरेन्द्र।।

-डॉ. वेद प्रकाश आर्य